पुराना नियम

कक्षा सदस्य अध्ययन निर्देशिका

प्रस्तावना

यह पाठ्यक्रम मुख्यतः पुराने नियम की शिक्षाओं पर केन्द्रित है । इसमें मूसा और इब्राहीम की किताबों के बारे में भी बताया गया है, जो कि अनमोल मोती का हिस्सा हैं । कुल मिलाकर, ये किताबें हमें स्वर्ग में हुई परिषद से लेकर उद्धारकर्ता के जन्म से पहले के कुछ सैकड़ों वर्ष की अवधि तक के लोगों के साथ परमेश्वर के व्यवहार का एक विवरण प्रदान करती हैं । ये विश्वास और आज्ञाकारिता के शक्तिशाली उदाहरणों को प्रदान करती हैं । ये परमेश्वर को भूलने, उसकी अवज्ञाकारिता, या उसके विरोध के परिणामों को भी दर्शाती हैं । इन किताबों में दी हुई भविष्यवाणियां उद्धारकर्ता के जन्म, प्रायश्चित, दूसरे आगमन, और हजार वर्ष के शासन की साक्षी देती हैं ।

यह अध्ययन निर्देशिका प्रत्येक सप्ताह में पढ़ने वाले कार्य को रूपरेखित करती हैं, लागू होनेवाले प्रश्नों के प्रति अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं, और आपके अध्ययन में स्पष्टता और विस्तार के लिए अतिरिक्त धर्मशास्त्र संदर्भों का सुझाव देती हैं । (किंग्स जेम्स बाइबिल के अ.दि.स. संस्करण में बाइबिल शब्दकोष, टोपिकल गाईड, और फूट नोट्स भी कई सहायक अंतर्दृष्टियां प्रदान करती हैं) । अध्ययन निर्देशिका को निम्नलिखित उपयोगों के लिए बनाया गया है:

क. *व्यक्तिगत धर्मशास्त्र अध्ययन* / प्रत्येक पढ़नेवाले कार्य में सम्मिलित लागू होनेवाले प्रश्न आपकी देखने में सहायता करेंगे कि किस प्रकार पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की शिक्षाएं मसीह की नजदीकी में होने में आपकी सहायता कर सकती हैं ।

ख. *पारिवारिक धर्मशास्त्र अध्ययन* / यह अध्ययन निर्देशिका पारिवारिक घरेलु संध्या और अन्य पारिवारिक चर्चाओं के पाठों के लिए एक मूल्यवान साधन होगी ।

ग. *कक्षा में चर्चा की तैयारी* / जब आप पढ़नेवाले कार्य का अध्ययन करते हैं और लागू होनेवाले प्रश्नों पर विचार करते हैं, आप अपनी सुसमाचार सिद्धान्त की कक्षा में अर्थपूर्ण योगदान देने के लिए बेहतर रूप से तैयार होंगे ।

अपने अध्ययन में आत्मा द्वारा निर्देशित होकर, आप अय्यूब के साथ गवाही देने में समर्थ होंगे, ''मुझे तो निश्चय है, कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा'' (अय्यूब 19:25) ।

''यह मेरा कार्य और मेरी महिमा है'' 1
मूसा 1

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. मूसा 1:1–11 । मूसा परमेश्वर को देखता है और आमने-सामने उससे बात करता है । मूसा जान जाता है कि वह पिता के एकलौते पुत्र की समानता में परमेश्वर का एक बेटा है ।

ख. मूसा 1:12–23 । शैतान मूसा के सामने खड़ा होता है; मूसा उसे भगाता है ।

ग. मूसा 1:24–39 । परमेश्वर फिर से प्रकट होता है और अपने कार्य और महिमा के बारे में सीखाता है ।

- मूसा 1:1–7 में वर्णन किए गए अनुभवों से मूसा परमेश्वर के बारे में क्या जानता है ? मूसा स्वयं के बारे में क्या जानता है ? यह जानकर कि हम परमेश्वर के बच्चे हैं, उसके पुत्र की समानता में बनाए गए हैं, हमारे जीवन में इससे क्या अन्तर हो सकता है ?
- शैतान के प्रलोभनों का सामना करने के लिए मूसा किस प्रकार बल प्राप्त करता है ? (देखें मूसा 1:18, 20–21) । किस प्रकार मूसा शैतान को भगाता है ? किस प्रकार प्रार्थना हमें प्रलोभन का सामना करने में बल प्रदान करती है ? बल प्राप्त करने के लिए हम और क्या कर सकते हैं ?
- यद्यपि परमेश्वर ने अनगिनत संसारों और लोगों को बनाया है, उसने मूसा को आश्वासन दिया कि वह उन सभी को जानता है (मूसा 1:35) । आपको यह जानकर कैसा लगता है कि स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह आपको व्यक्तिगत तौर पर जानते हैं और आपसे प्रेम करते हैं ?
- हमारे लिए यह जानना महत्वपूर्ण क्यों है कि परमेश्वर का कार्य और महिमा क्या है ? कौन से कुछ विशिष्ट तरीके हैं जिससे इस महान कार्य में हम उसकी सहायता कर सकते हैं ?

‘‘तुम्हारे जन्म से पहले तुम्हें चुन लिया गया था’’ 2

इब्राहीम 3; मूसा 4:1–4

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. इब्राहीम 3:11–12, 22–23; सिद्धान्त और अनुबन्ध 138:53–57 । इब्राहीम परमेश्वर से आमने-सामने बात करता है और जानता है कि नश्वरता के पहले के जीवन में कई ‘‘कुलीन और महान’’ आत्माओं को उनके नश्वर कार्य के लिए पहले से ही नियुक्त किया गया था (इब्राहीम 3:11–12, 22–23) । अध्यक्ष जोसफ एफ. स्मिथ इन ‘‘कुलीन और महान’’ लोगों के विषय में अपने दिव्यदर्शन से और अधिक जानते हैं जिसमें उद्धारकर्ता ने अपने पुनरुत्थान से पहले आत्मा के संसार का दौरा किया था (सि. और अनु. 138:53–57) ।

ख. इब्राहीम 3:24–28; मूसा 4:1–4 । इब्राहीम और मूसा को दिव्यदर्शन में दिखाया जाता है कि यीशु मसीह को हमारा उद्धारकर्ता होने के लिए स्वर्ग में हुई परिषद में चुन लिया गया था और यह कि हमने उसके अनुसरण को चुना था । उन्हें यह भी दिखाया गया था कि लूसीफर (शैतान) और उन आत्माओं को स्वर्ग से निकाल दिया गया था जिन्होंने उसका अनुसरण किया था ।

- अध्यक्ष जोसफ एफ. स्मिथ अपने आत्मा के संसार के दिव्यदर्शन में किसे देखते हैं ? (देखें सि. और अनु. 138:53) । इन लोगों को क्या करने के लिए पहले से नियुक्त किया गया था (देखें सि. और अनु. 138:55–56) ।
- भविष्यवक्ताओं को उनकी बुलाहटों के प्रति पहले से नियुक्त करने के अतिरिक्त, परमेश्वर ने अपने राज्य के विभिन्न तरीकों से निर्माण में सहायता के लिए कई ‘‘अन्य चुनी हुई आत्माओं’’ को नियुक्त किया था । आपको क्या करने के लिए नियुक्त किया गया होगा ? (देखें सि. और अनु. 138:56) ।
- स्वर्ग में हुई परिषद में वे कौन सी दो आत्माएं थीं जिन्होंने हमारा उद्धारकर्ता बनने का प्रस्ताव रखा था ? (देखें इब्राहीम 3:27; मूसा 4:1–2) । उनके प्रस्ताव किस प्रकार भिन्न थे ? हमारा मुक्तिदाता होने के लिए स्वर्गीय पिता ने यीशु मसीह को क्यों चुना ? (देखें मूसा 4:2–3) ।

अतिरिक्त पठन: यशायाह 14:12–15; प्रकाशितवाक्य 12:7–9; अलमा 13:3–5; सिद्धान्त और अनुबन्ध 29:36–39; और इब्राहीम 3 और सिद्धान्त और अनुबन्ध 138 का बाकी हिस्सा ।

रचना 3

मूसा 1:27–42; 2–3

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. मूसा 1:27–42 । मूसा परमेश्वर की रचना का एक दिव्यदर्शन प्राप्त करता है और उसे पृथ्वी की रचना का एक विवरण लिखने की आज्ञा दी जाती है ।

ख. मूसा 2:1–25; 3:1–14 । मूसा जानता है कि परमेश्वर सारी चीजों का रचयिता है ।

ग. मूसा 2:26–31; 3:7, 15–25 । मूसा जानता है कि पुरुषों और स्त्रियों को परमेश्वर की समानता में बनाया गया है ।

- परमेश्वर ने रचना के उद्देश्य के बारे में क्या प्रकट किया है ? (देखें मूसा 1:39; इब्राहीम 3:24–25; 1 नफी 17:36 भी देखें) ।
- आपके लिए परमेश्वर की कौन सी रचना विशेषकर सुंदर है ? रचना की सुंदरताओं पर हर दिन सावधानीपूर्वक ध्यान देकर हम किस प्रकार लाभान्वित होंगे ?
- किस प्रकार रचनाएं परमेश्वर की ‘‘साक्षी देती’’ हैं ? (देखें मूसा 6:63; अलमा 30:44) ।

अतिरिक्त पठन: इब्राहीम 4–5; उत्पत्ति 1–2 ।

''मेरे उल्लंघन के कारण मेरी आँखें खुल गईं'' 4
मूसा 4; 5:1–15; 6:48–62

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. मूसा 4; 5:10–11; 6:48–49, 55–56। शैतान अदन की वाटिका में आता है और हव्वा को फुसलाता है। हव्वा और आदम अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाते हैं (4:5–12)। पतित होने के पश्चात, आदम और हव्वा को वाटिका से निकाल दिया जाता है (4:13–31)। बाद में आदम और हव्वा पतन की आशीषों से आनन्दित होते हैं (5:10–11)। हनोक पतन के प्रभावों के बारे में सीखाता है (6:48–49, 55–56)।

ख. मूसा 5:14–15; 6:50–54, 57–62। यीशु मसीह के प्रायश्चित के कारण, नश्वर लोग पुनरुत्थान द्वारा शारीरिक मृत्यु से बचाए गए हैं और शायद विश्वास, पश्चाताप, बपतिस्मा, पवित्र आत्मा का उपहार, और आज्ञाओं के पालन के द्वारा आत्मिक मृत्यु से बचाए जाएं।

ग. मूसा 5:1–9, 12। आदम और हव्वा नश्वर के रूप में जीवन आरंभ करते हैं। वे अपने बच्चों को सुसमाचार की सच्चाइयों के बारे में सीखाते हैं (5:1–4, 12)। एकलौते पुत्र के बलिदान की समानता में आदम बलि देता है (5:5–9)।

- आदम और हव्वा के लिए—और हमारे लिए पतन के क्या परिणाम थे ? (देखें मूसा 4:22–29; 5:10–11; 6:48–49, 55–56; 2 नफी 2:22–23; 9:6; उत्पत्ति 3:16–23)।
- जब भविष्यवक्ता आदम और हव्वा के पतन के बारे में सीखाते हैं, अक्सर वे यीशु मसीह के प्रायश्चित के बारे में भी सीखाते हैं (मूसा 5:10–15; 6:48–62; 2 नफी 9:6–10)। पतन के साथ-साथ प्रायश्चित के बारे में सीखाना क्यों महत्वपूर्ण है ?
- उन बलिदानों का क्या उद्देश्य था जिसे आदम ने दिया था (देखें मूसा 5:7–9)। इसी के समान हमें कौन से तकाजे दिए गए हैं ?

अतिरिक्त पठनः उत्पत्ति 2–3; 1 कुरिन्थियों 15:20–22; 2 नफी 2:5–30; 9:3–10; इलामन 14:15–18; सिद्धान्त और अनुबन्ध 19:15–19; 29:34–44; विश्वास के अनुच्छेद 1:2; ''आदम का पतन'' बाइबिल शब्दकोष, पृष्ठ 670।

''यदि तुम भलाई का कार्य करोगे, तुम्हें स्वीकारा जाएगा'' 5
मूसा 5–7

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. मूसा 5:16–41। कैन परमेश्वर से अधिक शैतान से प्रेम करता है और प्रभु को एक भेंट चढ़ाने के लिए शैतान की आज्ञा का पालन करता है (5:16–19)। प्रभु कैन की भेंट को अस्वीकार कर देता है और कैन को पश्चाताप करने की आज्ञा देता है (5:20–25)। कैन शैतान से अनुबन्ध बनाता है और हाबिल को मार डालता है (5:26–33)। प्रभु कैन को श्राप देता है, और कैन को प्रभु की उपस्थिति से निष्काषित कर दिया जाता है (5:34–41)।

ख. मूसा 6:26–63। हनोक, आदम का चौथा पड़पोता, प्रभु द्वारा पश्चाताप का प्रचार करने के लिए नियुक्त किया जाता है (6:26–36)। हनोक प्रभु की आज्ञा का पालन करता है (6:37–63)।

ग. मूसा 7:13, 17–21, 23–47, 68–69। हनोक का विश्वास इतना मजबूत होता है कि पर्वत अपने स्थान से हट जाते हैं, नदियां अपना रास्ता बदल लेती हैं, और सारे राज्य डर जाते हैं (7:13, 17)। प्रभु और हनोक पृथ्वी पर रह रहे लोगों की दुष्टता पर विलाप करते हैं (7:23–47)। हनोक के नगर के लोग दिल और मन से प्रभु के साथ एक होते हैं, और पूरे नगर को स्वर्ग में उठा लिया जाता है (7:18–21, 68–69)।

- कैन ने क्या कहा जब प्रभु ने उससे पूछा कि हाबिल कहां है ? (देखें मूसा 5:34)। अपने भाई का रखवाला होने का क्या अर्थ है (देखें 1 यूहन्ना 3:11, 17–18)।

- प्रभु ने हनोक और उसके लोगों को सिय्योन क्यों कहा ? (देखें मूसा 7:18) । ''एक दिल और एक मन'' होने का क्या अर्थ है ? प्रभु के साथ, अपने परिवारों में, गिरजाघर में एक दिल और एक मन का होने के लिए हम क्या कर सकते हैं ?

अतिरिक्त पठनः मूसा 5:42–55; 6:10–23; 7:14–16, 59–64; 2 नफी 2:25–27; उत्पत्ति 4:1–16 ।

'नूह ने…अपने घराने के लिए जहाज बनाया'' 6

मूसा 8:19–30; उत्पत्ति 6–9; 11:1–9

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क मूसा 8:19–30; उत्पत्ति 6:5–22; 7:1–10 । नूह सुसमाचार का प्रचार करता है, परन्तु लोग उसकी बात नहीं सुनते हैं (मूसा 8:19–25) । लोगों की दुष्टता के कारण, प्रभु घोषणा करता है कि वह पृथ्वी से सारी मनुष्यजाति का नाश करेगा (मूसा 8:26–30; उत्पत्ति 6:5–13) । प्रभु ने नूह को एक जहाज बनाने और उसके परिवार और पृथ्वी पर रह रहे हर प्रकार के जीवित प्राणियों के एक-एक जोड़े को लेने की आज्ञा दी (उत्पत्ति 6:14–22; 7:1–10) ।

ख. उत्पत्ति 7:11–24; 8; 9:8–17 । 40 दिन और 40 रात तक बारिश हुई (7:11–12) । सारी मनुष्यजाति और प्राणी खत्म हो गए जो कि जहाज पर नहीं थे (7:13–24) । जब जल स्तर नीचे हुआ, नूह, उसका परिवार, और जानवर जहाज से बाहर आए, और नूह ने प्रभु को भेंट चढ़ाया (8:1–22) । प्रभु ने नूह के साथ अपने अनुबन्ध के चिन्ह के रूप में बादल में इंद्रधनुष दिखाया (9:8–17) ।

ग. उत्पत्ति 11:1–9 । प्रलय के बाद कुछ पीढ़ियों के पश्चात, लोगों ने आकाश से छूती हुई एक गुम्मट बनाने का प्रयास किया । प्रभु उनकी भाषा में गड़बड़ी पैदा करता है और उन्हें पूरी पृथ्वी पर तितर-बितर कर देता है ।

- संसार कैसा था जब प्रभु ने नूह को सुसमाचार का प्रचार करने के लिए कहा ? (देखें मूसा 8:20–22) । नूह के समय के लोगों में और हमारे समय के लोगों में आप कौन सी समानताएं देख सकते हैं ?
- नूह के समय के लोग किस प्रकार विनाश से बच सकते थे ? (देखें मूसा 8:23–24) । भविष्यवक्ताओं को सुनने और उनका अनुसरण करने से किस प्रकार आत्मिक और लौकिक विध्वंश से बचने में हमारी सहायता हो सकती है ?
- नूह ने जहाज क्यों बनाया था ? (देखें इब्रानियों 11:7) । आज हमारे पास कौन से ''जहाज'' हैं जो हमारे आसपास की बुराइयों से बचने में हमारी सहायता कर सकते हैं ? (इस प्रश्न के उत्तर के लिए आप पुस्तिका *युवा के बल के लिए* [34285] को संदर्भ कर सकते हैं) । किस प्रकार हम इन ''जहाजों'' में दूसरों के लिए शरण खोज सकते हैं ?

अतिरिक्त पठनः इब्रानियों 11:7; मूसा 7:32–36 ।

इब्राहीम की वाचा 7

इब्राहीम 1:1–4; 2:1–11; उत्पत्ति 12:1–8; 17:1–9

इब्राहीम 1:1–4; 2:1–11; उत्पत्ति 12:1–8; 17:1–9 का अध्ययन करें । इन परिच्छेदों में इब्राहीम धार्मिक और परमेश्वर की आशीषों के योग्य होना चाहता है । परमेश्वर इब्राहीम के साथ अनुबन्ध बनाता है, यह प्रतिज्ञा करते हुए कि इब्राहीम की कई पीढ़ियां होंगी जो एक प्रतिज्ञा की भूमि और पौरोहित्य और सुसमाचार की आशीषों को प्राप्त करेंगी ।

गिरजाघर के सभी सदस्य इब्राहीम के वंशज हैं, जिसका अर्थ है कि हम उसकी पीढ़ियां हैं और इब्राहीम की वाचा की आशीषों और जिम्मेदारियों के उत्तराधिकारी हैं । ये महान आशीषें हमारे पास तब आती हैं जब हम सुसमाचार के अनुबन्धों का पालन करते हैं । पहला अनुबन्ध जिसे हमने बनाया है वह है बपतिस्मा । बाद में

हम मन्दिर में इब्राहीम की वाचा की परिपूर्णता को प्राप्त करते हैं ।

- इब्राहीम की वाचा के भाग के रूप में प्रभु इब्राहीम से कौन सी आशीषों का वादा करता है ? (देखें इब्राहीम 2:6–11; उत्पत्ति 17:1–9) ।
- इब्राहीम की वाचा के उत्तराधिकारी के रूप में हमारी क्या जिम्मेदारियां हैं ? (देखें इब्राहीम 2:9, 11; उत्पत्ति 18:19) ।

अतिरिक्त पठनः सिद्धान्त और अनुबन्ध 132:19–24, 29–32; उत्पत्ति 15; ''इब्राहीम, की वाचा'', बाइबिल शब्दकोष, पृष्ठ 602 ।

एक पापी संसार में नेकता से जीवन व्यतीत करना 8

उत्पत्ति 13–14; 18–19

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. उत्पत्ति 13 । कुछ समय के लिए मिस्र में रहने के पश्चात, इब्राहीम और उसका परिवार कनान वापस जाता है । इब्राहीम हेब्रोन में रहने लगता है, और उसका भतीजा लूत सदोम के पास रहने लगता है ।

ख. उत्पत्ति 14:1–2, 8–24 । लूत को बन्दी बना लिया जाता है और वह इब्राहीम द्वारा बचाया जाता है (14:1–2, 8–16) । इब्राहीम मेल्कीसेदेक को दसमांश देता है और सदोम के राजा से युद्ध के धन को स्वीकार करने से मना कर देता है (14:17–24) ।

ग. उत्पत्ति 18:16–33; 19:1– । प्रभु कहता है कि वह सदोम और अमोरा को लोगों की दुष्टता के कारण नष्ट कर देगा (18:16–22) । इब्राहीम प्रभु से नगरों को छोड़ देने की याचना करता है यदि वह वहां नेक लोगों को रहते हुए पाए (18:23–33) । लूत और उसके परिवार को सदोम छोड़ने की आज्ञा दी जाती है (19:1–23) । प्रभु सदोम और अमोरा को नष्ट करता है (19:24–29) ।

- पहले लूत सदोम के बाहर ''तराई के नगरों में रहता था'', परन्तु उसने ''अपना तम्बू सदोम के निकट खड़ा कर दिया'' (उत्पत्ति 13:12) । बाद में वह सदोम के नगर में रहा था (उत्पत्ति 14:12) । हम कौन से कुछ काम कर सकते हैं जो आत्मिक तौर पर अपने तम्बूओं को सदोम की तरफ खड़ा करने के बराबर हो ?
- इब्राहीम ने क्या कहा जब उसने जाना कि प्रभु सदोम और अमोरा को नष्ट करने जा रहा है ? (देखें उत्पत्ति 18:23–32) । उस तथ्य से हम क्या सीखते हैं कि प्रभु उन नगरों को छोड़ देगा यदि उनमें वह नेक लोगों को पा सके ?

अतिरिक्त पठनः उत्पत्ति 12; जोसफ स्मिथ अनुवाद, उत्पत्ति 14:25–40; 19:9–15 ।

''परमेश्वर स्वयं ही एक मेम्ने को उपलब्ध कराएगा'' 9

इब्राहीम 1; उत्पत्ति 15–17; 21–22

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. इब्राहीम 1:1, 5–20 । एक युवा पुरुष के रूप में, इब्राहीम फिरौन के झूठे याजकों द्वारा सताया गया था । उन्होंने उसका बलिदान चढ़ाने का प्रयास किया था, परन्तु वह यहोवा द्वारा बचाया गया था ।

ख. उत्पत्ति 15–17; 21 । उसके जीवन के अन्तिम समय में, इब्राहीम से वारिस की प्रतिज्ञा की गई (15:1–6) । सारा हाजिरा को इब्राहीम की पत्नी बनाती है; हाजिरा इश्माएल को जन्म देती है (16:1–16) । परमेश्वर फिर से इब्राहीम से अपने अनुबन्ध के बारे में बात करता है, प्रतिज्ञा करते हुए कि इब्राहीम कई राष्ट्रों का पिता होगा (17:1–14) । इसहाक के जन्म की घोषणा हुई, जिसके द्वारा अनुबन्ध जारी रहेगा (17:16–22) । सारा इसहाक को जन्म देती है (21:1–12) ।

ग. उत्पत्ति 22 । परमेश्वर इब्राहीम को इसहाक को बलि चढ़ाने की आज्ञा देता है (22:1–2) । इब्राहीम इसहाक की बलि की तैयारी करता है, परन्तु उसके स्थान पर बलि के लिए परमेश्वर एक भेड़ का प्रबंध करता है (22:3–19) ।

ध्यान दें: उत्पत्ति 17 प्रभु द्वारा अब्राम के नाम को इब्राहीम और सारै के नाम को सारा करने के बारे में बताती है (देखें आयत 5, 15) । इब्राहीम और सारा के नाम का उपयोग इस पूरे खण्ड में किया गया है ।

- इसहाक को बलिदान चढ़ाने की परमेश्वर की आज्ञा पर इब्राहीम कैसी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है ? (देखें उत्पत्ति 22:2–3) । इस परिस्थिति पर इसहाक की कैसी प्रतिक्रिया होती है ? (देखें उत्पत्ति 22:3–10) । इब्राहीम और इसहाक से हम विश्वास और आज्ञाकारिता के विषय में क्या सीख सकते हैं ? (देखें इब्रानियों 11:17–19; याकूब 2:21–23) ।
- इसहाक को बलिदान चढ़ाने की इब्राहीम की इच्छा स्वर्गीय पिता द्वारा अपने एकलौते पुत्र को बलिदान करने की इच्छा के समान थी (याकूब 4:5; उत्पत्ति 22:8, 13) । इब्राहीम और स्वर्गीय पिता के अनुभव में और कौन सी कुछ समानताएं हैं ? सबसे बड़ा अन्तर क्या है ?

अतिरिक्त पठन: इब्रानियों 11:8–19; याकूब 2:21–23; याकूब 4:5; सिद्धान्त और अनुबन्ध 132:34–36 ।

पहिलौठे के अधिकार की आशीषें; अनुबन्ध में विवाह 10
उत्पत्ति 24–29

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. उत्पत्ति 24 । इसहाक के लिए एक योग्य पत्नी का चुनाव करके इब्राहीम अनुबन्ध में विवाह की महत्वपूर्णता पर जोर दिया है ।

ख. उत्पत्ति 25:20–34 । रिबका अपने अजन्मे जुड़वे बच्चों के बारे में एक प्रकटीकरण प्राप्त करती है (25:22–23) । जब ये पुत्र बड़े हो जाते हैं, एसाव याकूब को अपने पहिलौठे का अधिकार बेच देता है (25:29–34) ।

ग. उत्पत्ति 26–29 । इसहाक और उसके वंशजों से इब्राहीम की वाचा की आशीषों की प्रतिज्ञा की जाती है (26:1–5) । एसाव अनुबन्ध से बाहर विवाह करता है (26:34–35) । लोगों और राष्ट्रों पर शासन करने के लिए इसहाक याकूब को आशीष देता है (27:1–46) । इसहाक याकूब को इब्राहीम की वाचा की आशीषों की घोषणा करता है और योग्य पत्नी खोजने के लिए उसे बाहर भेजता है (28:1–10) । याकूब लिआ और राहेल से अनुबन्ध में विवाह करता है (29:1–30) ।

- हममें से कुछ लोग किस प्रकार एसाव के समान गलतियां कर सकते हैं, उन चीजों का चुनाव करने से जो अनन्त मूल्य की होने की बजाय शीघ्र ही तुष्टीकरण प्रदान करती हैं ।
- याकूब के अनुबन्ध में विवाह करने के उसके प्रयासों से हम क्या सीख सकते हैं ? (देखें उत्पत्ति 28:1–5; 29:1–28) ।
- मन्दिर में विवाह के प्रति कौन सी कुछ चीजों हैं जिसकी तैयारी बच्चे और युवा कर सकते हैं ? मन्दिर में दो लोगों के विवाह करने के पश्चात, उन्हें सुनिश्चित करने के लिए क्या करना होगा कि उन्हें एक वास्तविक अनन्त विवाह प्राप्त हो ?

''मैं ऐसी दुष्टता कैसे कर सकता हूं''
उत्पत्ति 34; 37–39

11

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. उत्पत्ति 37। याकूब का ग्यारहवां पुत्र, यूसुफ, अपने भाइयों द्वारा ईर्ष्या का शिकार बनता है और बंधक के रूप में बेच दिया जाता है।

ख. उत्पत्ति 39। एक दास के रूप में यूसुफ की उन्नति होती है परन्तु उस पर अनैतिकता का दोष लगता है और उसे बन्दीगृह में डाल दिया जाता है (39:1–20)। बन्दीगृह का दरोगा यूसुफ को अन्य कैदियों की देखभाल की जिम्मेदारी सौंपता है (39:21–23)।

ग. उत्पत्ति 34:1–12; 35:22; 38:1–30। याकूब के परिवार पर अनैतिकता के पाप के नकारात्मक परिणाम होते हैं (34:1–12; 35:22; 38:1–30)।

याकूब की पत्नियां बारह पुत्रों को जन्म देती हैं, जहां से इस्राएल की बारह जातियों का आरंभ होता है (प्रभु याकूब के नाम को बदलकर इस्राएल रख देता है; देखें उत्पत्ति 32:28)। यूसुफ याकूब का ग्यारहवां पुत्र होता है; याकूब और राहेल का बड़ा बेटा होने के नाते, यूसुफ पहिलौठा का अधिकार प्राप्त करता है जब रूबेन, याकूब और लिआ का बड़ा बेटा उसे अधार्मिकता के कारण खो देता है (1 इतिहास 5:1–2)।

- यूसुफ ने क्या किया जब पोतीपर की पत्नी ने उसे पाप में डालने का प्रयास किया ? (देखें उत्पत्ति 39:11–12)। जब हम प्रलोभन में पड़ते हैं तब यूसुफ के उदाहरण का किस प्रकार अनुसरण कर सकते हैं ?

- बुरे अनुभवों और परिस्थितियों को अच्छे में बदलने के बारे में हम यूसुफ से क्या सीख सकते हैं ? (देखें उत्पत्ति 39:20–23; रोमियों 8:28 भी देखें)।

अतिरिक्त पठन: उत्पत्ति 34:13–31।

''मुझे दुख भोगने के देश में फुलाया फलाया है''
उत्पत्ति 40–45

12

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. उत्पत्ति 40–41। बन्दीगृह में, यूसुफ फिरौन के सेवकों के स्वप्नों की सही-सही व्याख्या करता है। फिर वह फिरौन के गायों और बालों के स्वप्न की व्याख्या करता है। फिरौन की अध्यक्षता में यूसुफ को मिस्र का शासक बना दिया जाता है और वह लोगों को अकाल के लिए तैयार करता है।

ख. उत्पत्ति 42–45। याकूब दो बार अपने पुत्रों को अनाज खरीदने के लिए मिस्र भेजता है। यूसुफ स्वयं को अपने भाइयों पर प्रकट करता है और उन्हें क्षमा कर देता है, और वे एक साथ आनन्दित होते हैं।

- संसार हमें क्या करने के लिए कहता है जब कोई हमारे प्रति कुछ गलत करता है, जैसा कि यूसुफ के भाइयों ने उसके साथ किया था ? प्रभु हमें क्या करने के लिए कहता है ? (देखें सि. और अनु. 64:8–11)। आप किस प्रकार आशीषित हुए हैं जब आपने उन लोगों के साथ उदारता से व्यवहार किया है जिन्होंने आपके साथ दुर्व्यवहार किया हो ? किस प्रकार हम अधिक क्षमा करनेवाले बन सकते हैं ?

- मिस्र में यूसुफ का बन्दीगृह में रहना, जो कि उसके लिए एक परीक्षा थी, किस प्रकार उसके, उसके परिवार, और पूरे मिस्र के लिए आशीर्वाद बन जाती है ? (देखें उत्पत्ति 45:4–8)। आपको ऐसे कौन से अनुभव हुए हैं जो कि पहले तो नकारात्मक दिखाई देते थे पर बाद में आशीष में बदल गए थे ?

अतिरिक्त पठन: 2 नफी 2:2; सिद्धान्त और अनुबन्ध 64:8–11; 122:5–9।

दासता, फसह का पर्व्ब, और निर्गमन
निर्गमन 1–3; 5–6; 11–14

13

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. निर्गमन 1–3। इस्राएली मिस्रियों द्वारा गुलाम बनाए गए थे (1:1–14)। फिरौन आदेश देता है कि इस्राएलियों के सभी जन्म लेनेवाले पुत्रों को मार दिया जाए (1:15–22)। मूसा का जन्म हुआ और उसका पालन-पोषण फिरौन की बेटी द्वारा हुआ (2:1–10)। प्रभु मूसा को जलती हुई झाड़ियों में दिखाई देता है और उसे इस्राएली को दासता से मुक्त करने के लिए नियुक्त करता है (3:1–22)।

ख. निर्गमन 5–6। मूसा और हारून फिरौन से इस्राएल को आजाद करने के लिए कहते हैं, परन्तु फिरौन मना कर देता है और लोगों को और अधिक सताना शुरू कर देता है (5:1–23)। प्रभु इब्राहीम के साथ बनाए गए अनुबन्धों को पूरा करने की प्रतिज्ञा करता है (6:1–8)।

ग. निर्गमन 11–13। मिस्र पर कई महामारियों को भेजन के पश्चात, प्रभु उन पर एक और महामारी भेजने की प्रतिज्ञा करता है, जिसमें हर घर में जन्मा पहिलौठा पुत्र मर जाएगा (11:1–10। प्रभु मूसा को फसह के पर्व्ब की तैयारी का आदेश देता है, जो कि इस्राएल को महामारी से बचाएगा (12:1–20)। मिस्र में जन्मे पहिलौठे पुत्रों को मार दिया जाता है (12:29–30)। फिरौन मूसा को कहता है कि वो अपने लोगों को मिस्र से ले जाए, और इस्राएली चले जाते हैं (12:31–42)। मूसा इस्राएल के बच्चों से भविष्य में उनकी आजादी की याद में बिना खमीर की रोटी का पर्व्ब मनाने के लिए कहता है (13:1–16)। प्रभु इस्राएल के शिविर के सामने दिन में मेघ के खम्भे के रूप में और रात में आग के खम्भे के रूप में जाता है (13:17–22)।

घ. निर्गमन 14। फिरौन और उसकी सेना इस्राएलियों का पीछा करते हैं (14:1–9)। लोग डर जाते हैं और मूसा प्रभु से सहायता की याचना करता है (14:10–18)। इस्राएली सूखी धरती से होकर लाल सागर पार करते हैं; फिरौन के लोग उनका पीछा करते हैं और डूब जाते हैं (14:19–31)।

- आखिरी भोज पर, उद्धारकर्ता ने फसह के पर्व्ब के स्थान पर प्रभुभोज को स्थापित किया था (मत्ती 26:19, 26–28)। फसह के पर्व्ब और प्रभुभोज में क्या समानताएं हैं ? (देखें निर्गमन 12:14; 13:9–10; सि. और अनु. 20:75–79)।
- मूसा ने इस्राएल के बच्चों से क्या कहा था जब उन्होंने फिरौन की सेना को देखा था और उनका विश्वास डगमगाया था ? (देखें निर्गमन 14:13–14)। जब हम भयभीत होते हैं तब अपनी सहायता को पर्याप्त मात्रा में बल देने के लिए हम किस प्रकार विश्वास को बढ़ा सकते हैं ?
- आगे बढ़ रही मिस्री सेना से प्रभु ने इस्राएल के बच्चों को किस प्रकार बचाया था ? (देखें निर्गमन 14:21–31)। कष्ट के समय में यह कहानी हमारी किस प्रकार से मदद कर सकती है ?

अतिरिक्त पठन: निर्गमन 4; 7–10; 15।

''तुम ही मेरा निजी धन ठहरोगे''
निर्गमन 15–20; 32–34

14

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. निर्गमन 15:22–27; 16:1–31; 17:1–7। इस्राएल के बच्चे बड़बड़ाते हैं क्योंकि वे प्यासे और भूखे होते हैं; प्रभु पानी, मन्ना, और बटेर उपलब्ध कराता है।

ख. निर्गमन 17:8–13; 18:13–26। अमालेकी इस्राएल पर हमला करता है। इस्राएल जीत की ओर बढ़ता है जब मूसा के हाथ ऊपर होते हैं, परन्तु अमालेकी जीत की ओर बढ़ता है जब मूसा थक जाता है और अपने हाथों को नीचे कर लेता है। हारून और हूर मूसा के हाथों को पकड़ कर रखते हैं और इस्राएल युद्ध में जीत जाता है (17:8–13)। मूसा अधिकार देते हुए न्यायाधीशों की नियुक्ति करता है (18:13–26)।

ग. निर्गमन 19–20। प्रभु सीनै पर्वत पर मूसा से मिलता है और इस्राएल को दस आज्ञाएं देता है।

घ. निर्गमन 32–34। मूसा प्रभु से पत्थर की तख्तियां प्राप्त करता है जिसपर निर्देश लिखे होते हैं परन्तु वह तख्तियों को तोड़ देता है जब लोगों को एक सोने के बछड़े की उपासना करते हुए देखता है (31:18; 32:1–24)। प्रभु इस्राएल से मलकिसिदक पौरोहित्य की धर्मविधियां ले लेता है और उन्हें एक छोटी व्यवस्था, मूसा की व्यवस्था प्रदान करता है (जोसफ स्मिथ अनुवाद, निर्गमन 34:1–2)। मूसा पत्थर की नई तख्तियों को गढ़ता है, परन्तु नई तख्तियों में ''पवित्र पौरोहित्य के अनन्त अनुबन्ध के शब्द'' शामिल नहीं होते हैं (निर्गमन 34:1–5; जोसफ स्मिथ अनुवाद, व्यवस्थाविवरण 10:2)। लोग मूसा की व्यवस्था के आज्ञापालन का अनुबन्ध बनाते हैं (34:10–35)।

- मन्ना किस प्रकार मसीह का प्रतिनिधि है ? (देखें यूहन्ना 6:35)। मसीह की जीवित रोटी किस प्रकार मन्ना से भिन्न है ? (देखें यूहन्ना 6:48–51)। किस प्रकार हम नियमित रूप से मसीह की जीवित रोटी को ग्रहण कर सकते हैं ?

- प्रभु ने इस्राएल के बच्चों से क्या प्रतिज्ञा की थी यदि वे आज्ञाकारी होंगे ? (देखें निर्गमन 19:3–6)। ये प्रतिज्ञाएं आज हम पर किस प्रकार लागू होती हैं ?

- प्रभु ने इस्राएल के बच्चों को मूसा की व्यवस्था क्यों दी ? (देखें गलतियों 3:23–24; मुसायाह 13:29; अलमा 25:15–16; सि. और अनु. 84:19–27)। किस प्रकार से इस व्यवस्था ने इस्राएल को पवित्र बनाने और मसीह के पास आने में उनकी सहायता की थी ? (देखें मुसायाह 13:30; अलमा 34:14–15)।

- मूसा की व्यवस्था कब पूरी हुई थी ? (देखें 3 नफी 15:4–10)। अब जब कि प्रभु को जानवरों के बलिदान की आवश्यकता नहीं थी, जो कि मूसा की व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण भाग था, वह हमें कौन सा बलिदान देने के लिए कहता है ? (देखें 3 नफी 9:19–22)। एक टूटे दिल और शोकार्त आत्मा को समर्पित करने का क्या अर्थ है ?

अतिरिक्त पठनः भजन संहिता 78; 1 कुरिन्थियों 10:1–11; सिद्धान्त और अनुबन्ध 84:19–27।

''परमेश्वर की ओर देखो और जीओ''
गिनती 11–14; 21:1–9

15

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. गिनती 11। इस्राएली मन्ना के विषय में कुड़कुड़ाते हैं और माँस खाने की इच्छा करते हैं (11:1–9)। प्रभु द्वारा निर्देशित होकर, अपनी सहायता के लिए मूसा 70 पुरनियों को एकत्रित करता है (11:10–17, 24–30)। प्रचुरता में बटेर भेजकर प्रभु उनके माँस खाने की इच्छा का उत्तर देता है और उनके लालच और अति मग्न होने के कारण उन पर महामारी भेजकर उन्हें दण्ड देता है (11:18–23, 31–35)।

ख. गिनती 12। मरियम और हारून मूसा के विरूद्ध बोलते हैं (12:1–3)। मरियम और हारून की कुड़कुड़ाहट के लिए प्रभु उन्हें सताता और दण्डित करता है (12:4–16)।

ग. गिनती 13–14। कनान की धरती की खोज के लिए मूसा ने 12 लोगों को निर्देश दिया (13:1–20)। धरती के स्रोतों के विषय में वे समर्थनवाली टिप्पणी के साथ वापस आते हैं, परन्तु यहोशू और कालेब के अलावा दूसरे लोग वहां की प्रजातियों से डर जाते हैं और वापस मिस्र लौटना

चाहते हैं (13:21–14:10)। प्रभु मूसा को बताता है कि अविश्वासी और कुड़कुड़ानेवाले इस्राएली जंगल में 40 वर्षों तक भटकेंगे, तब तक जब तक कि यहोशू और कालेब के अलावा सारी वयस्क पीढ़ी खत्म न हो जाए (14:11–39)।

घ. गिनती 21:1–9। इस्राएली उन कनानियों का नाश कर देते हैं जो उनके विरूद्ध आते हैं (21:1–3)। इस्राएलियों की निरन्तर कुड़कुड़ाहट के लिए सजा के रूप में प्रभु उन पर तेज विषवाले साँपों को भेजता है (21:4–6)। मूसा पीतल का एक साँप बनाता है, उसे एक खम्भे से बाँध देता है, और लोगों को बताता है कि यदि वे इसकी तरफ देखेंगे, वे बच जाएंगे (21:7–9)।

- इस्राएली मन्ना के विषय में क्यों बड़बड़ाते हैं ? (देखें गिनती 11:4–6)। हमारे पास जितना है उससे अधिक की चाहत रखने के क्या खतरे हैं ?
- बिल्कुल वैसे ही जैसे कि जीवित रहने के लिए इस्राएल के बच्चों को पीतल के साँप की तरफ देखने की आवश्यकता थी, अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए हमें यीशु मसीह की तरफ देखने की आवश्यकता है (अलमा 37:46–47; इलामन 8:15)। मसीह के तरफ देखने का क्या अर्थ है ?

अतिरिक्त पठनः यूहन्ना 3:14–16; 1 नफी 17:41; अलमा 33:18–22; 37:46–47; इलामन 8:13–15।

''मैं परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को पलट नहीं सकता'' 16

गिनती 22–24; 31:1–16

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. गिनती 22:1–21। बालाक, मोआब का राजा, इस्राएलियों के पास आने से भयभीत था। वह बिलाम को पुरस्कार देने के लिए कहता है यदि वह मोआब में आकर इस्राएलियों को श्राप दे। परमेश्वर बिलाम को मना करने की आज्ञा देता है, और बिलाम आज्ञा का पालन करता है (22:1–14)। बालाक बिलाम को और अधिक सम्मान और धन देने के लिए कहता है यदि वह मोआब आकर इस्राएलियों को श्राप दे। परमेश्वर बिलाम से कहता है कि यदि उसकी इच्छा है तो वह जा सकता है परन्तु उसे केवल वही बोलना होगा जो परमेश्वर उससे बोलने के लिए कहेगा (22:15–21)। बिलाम जाने का निश्चय करता है।

ख. गिनती 22:22–35। बिलाम के बालाक से कुछ पुरस्कार की आशा करते हुए मोआब जाने से परमेश्वर क्रोधित होता है। अपने मार्ग में, बिलाम परमेश्वर को अप्रसन्न करने के खतरों के बारे में जान जाता है जब उसकी गदही और दूत उससे बात करते हैं।

ग. गिनती 22:36–24:25। बालाक बिलाम से इस्राएल को तीन बार श्राप देने के लिए कहता है, परन्तु बिलाम परमेश्वर की आज्ञा का पालन करता है और हर बार इस्राएल को आशीष देता है (22:36–24:9)। तब वह मोआब को श्राप देता है और यीशु मसीह के विषय में भविष्यवाणी करता है (24:10–25)।

घ. गिनती 31:1–16। इस्राएली मिद्यानियों का विनाश और बिलाम का वध कर देते हैं। मूसा समझाता है कि बिलाम ने मिद्यानियों को सलाह दिया था कि वे इस्राएलियों को पाप में पड़ने का प्रलोभन दें। (बिलाम की सलाह के परिणामों का वर्णन गिनती 25:1–3 में किया गया है। यद्यपि बिलाम ने इस्राएलियों को सीधे तौर पर श्राप नहीं दिया था, स्पष्ट रूप से वह बालाक से पुरस्कार प्राप्त करना चाहता था कि उसने इस्राएल को पाप में डालने के प्रलोभन का सुझाव दे दिया, उन्हें परमेश्वर की सुरक्षा से वंचित करते हुए)।

- मोआब जाकर इस्राएल को श्राप देने के बदले में पुरस्कार के प्रस्ताव का बिलाम ने किस प्रकार उत्तर दिया ? (देखें गिनती 22:5–14)। कभी-कभी परमेश्वर की अवज्ञाकारिता के बदले में हमें इस प्रकार के कौन से तथाकथित पुरस्कारों का प्रस्ताव दिया जाता है ?
- मोआब के अपने मार्ग में, बिलाम ने अपनी गदही को तीन बार आगे बढ़ने के लिए बाध्य किया (गिनती 22:22–30)। यह किस प्रकार से प्रभु के साथ बिलाम के संबंध के समान था ? कुछ व्यक्तियों और दलों के कौन से कुछ आधुनिक समकक्ष हैं जो जिद्द में आकर परमेश्वर की इच्छा या माता-पिता और मार्गदर्शकों की नेक सलाह के प्रति समर्पित होने की बजाय वह करने का प्रयास करते हैं जिसे वे करना चाहते हैं ?
- नये नियम के तीन लेखकों ने बिलाम का संदर्भ दिया है (2 पतरस 2:15–16; यहूदा 1:11; प्रकाशितवाक्य 2:14)। उस पर उनके क्या विचार थे ? बिलाम की कहानी से हम कौन सा पाठ सीख सकते हैं ?

''तब सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि तू भूल जाए''
व्यवस्थाविवरण 6; 8; 11; 32

17

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. व्यवस्थाविवरण 6:1–9; 11:18–21। मूसा इस्राएलियों को उनके अनुबन्धों को याद करने में उनकी सहायता के लिए निर्देश देता है। वह माता-पिता को उसके शब्दों को उनके बच्चों को सीखाने का निर्देश देता है।

ख. व्यवस्थाविवरण 6:10–12; 8:1–20। मूसा इस्राएलियों को उनके प्रति परमेश्वर की आशीषों को फिर से याद दिलाता है। वह उन्हें चेतावनी देता है कि यदि वे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं करते हैं और उसे याद नहीं करते हैं तो उनका नाश हो जाएगा।

ग. व्यवस्थाविवरण 32:1–4, 15–18, 30–40, 45–47। मूसा इस्राएलियों को सलाह देता है कि वे अपने उद्धारकर्ता (यीशु मसीह) नामक चट्टान पर ध्यान दें।

40 वर्षों तक जंगलों में परीक्षा लेने, दण्डित करने, और शिक्षा देने के पश्चात, प्रभु ने कहा था कि अब वे प्रतिज्ञा की भूमि में प्रवेश के लिए तैयार हैं। परन्तु उनके लिए उसके पास कुछ महत्वपूर्ण निर्देश थे। मूसा ने इन निर्देशों को तीन उपदेशों में दिया था जिन्हें व्यवस्थाविवरण में लिखा गया है।

- आपके विचार से मूसा ने लोगों को धर्मशास्त्र के अनुच्छेदों को उनकी आँखों के मध्य, उनके हाथों पर, उनके घरों के स्तम्भों पर, और दरवाजों पर रखने के लिए क्यों कहा ? इस प्रकार के निरन्तर स्मरण पत्र हमारी क्रियाओं पर किस प्रकार का प्रभाव डालते हैं ? प्रभु को, उसके वचनों को, और उसके साथ हमारे अनुबन्धों को स्वयं को याद दिलाने के लिए हम अपने घरों में क्या कर सकते हैं ? हमारी दीवारों पर लगे चित्र, किताबें जिन्हें हम पढ़ते हैं, और जिन चलचित्रों और टेलिविजन कार्यक्रम को हम देखते हैं, क्या वे हमें प्रभु की याद दिलाते हैं, या क्या वे संसार के लिए उत्कंठा को बढ़ावा देते हैं ?

- व्यवस्थाविवरण 6:10–12 और 8:1–20 में मूसा के कौन से मुख्य संदेश हैं ? प्रभु को भूलने का क्या अर्थ है ? (देखें व्यवस्थाविवरण 8:11)। उसे भूलने के क्या परिणाम हैं ? (देखें व्यवस्थाविवरण 8:19)।

- व्यवस्थाविवरण 32:3–4 में बताया गया चट्टान कौन है ? (यीशु मसीह)। आपके विचार से कभी-कभी यीशु मसीह को चट्टान क्यों कहा गया है ? (देखें इलामन 5:12)। चट्टान पर निर्माण का क्या अर्थ है ? (देखें व्यवस्थाविवरण 32:46–47; मत्ती 7:24–27; सि. और अनु. 50:44)।

अतिरिक्त पठनः व्यवस्थाविवरण 4; 7:1–4; 13:1–8; 34।

''हियाव बान्धकर दृढ़ हो जा''
यहोशू 1–6; 23–24

18

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. यहोशू 1। मूसा का उत्तराधिकारी होने के लिए प्रभु यहोशू को नियुक्त करता है। यहोशू इस्राएलियों को उस भूमि की तरफ ले जाने लिए तैयार करता है जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने उनसे की थी।

ख. यहोशू 3–4; 6। इस्राएली सूखी धरती से होकर यरदन नदी पार करते हैं और इस बात को याद रखने के लिए 12 पत्थर रख देते हैं। इस्राएलियों के विश्वास के द्वारा, यरीहो का नाश हो जाता है।

ग. यहोशू 23; 24:14–31। यहोशू और उसके लोग प्रभु की सेवा करने का अनुबन्ध करते हैं।

मूसा ही एकमात्र मार्गदर्शक था जिसे इस्राएलियों की पूरी पीढ़ी में जाना जाता था। परन्तु प्रभु उसे जंगल में उनके डेरे के अन्त तक ले गया था—जब उन्होंने एक बड़ी परीक्षा का सामना किया था। इस्राएल के प्रति अपनी प्रतिज्ञाओं को याद करते हुए, प्रभु ने एक नये मार्गदर्शक, यहोशू को खड़ा किया था।

- ''सब काम में सफल होने'' के लिए प्रभु ने यहोशू से क्या करने को कहा ? (देखें यहोशू 1:8) । आपके विचार से उसकी नियुक्ति में सफलता प्राप्त करने के प्रति यहोशू के लिए धर्मशास्त्र अध्ययन क्यों महत्वपूर्ण रहा होगा ? नियमित रूप से धर्मशास्त्र अध्ययन ने आपकी कैसे सहायता की है ?

- अपने जीवन के अन्त में यहोशू कौन सी महत्वपूर्ण सलाह देता है ? (देखें यहोशू 24:14–15) । *आज* प्रभु की सेवा को चुनना क्यों महत्वपूर्ण है ? हम कैसे दिखा सकते हैं कि हमने उसकी सेवा को चुना है ?

अतिरिक्त पठनः यहोशू 7; 14 ।

न्यायियों का शासन

न्यायियों 2; 4; 6–7; 13–16

19

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. न्यायियों 2:6–23 । इस्राएल की उभर रही पीढ़ी ने झूठे परमेश्वरों की सेवा करने के लिए प्रभु को छोड़ दिया ।

ख. न्यायियों 4:1–16 । बाराक को कनान के राजा याबीन से इस्राएल को मुक्त कराने की आज्ञा दी गई थी (4:1–7) । वह जाने की सहमति दे देता है यदि दबोरा उसके साथ जाए (4:8–9) । दबोरा और बाराक इस्राएल को कनानियों से मुक्त कराते हैं (4:10–16) ।

ग. न्यायियों 6–7 । मिद्यानियों से इस्राएल को मुक्त कराने की आज्ञा गिदोन को दी गई थी (6:1–24) । वह और अन्य 10 लोग बाल की वेदी का नाश कर देते हैं (6:25–35) । प्रभु गिदोन को दो चिन्ह देने के द्वारा सहायता करने का आश्वासन देता है (6:36–40) । गिदोन और अन्य 300 लोग इस्राएल को मुक्त कराते हैं (7:1–25) ।

घ. न्यायियों 13–16 । एक दूत शिमशोन के माता-पिता को उसे एक नाजीर के रूप में बड़ा करने का आदेश देता है (13:1–25) । शिमशोन बल के असाधारण कार्यों को करता है परन्तु अपने नाजीर होने की कई प्रतिज्ञाओं को तोड़ता है (14–15) । शिमशोन दलीला के प्रलोभन में पड़ जाता है; उसके बाल काट दिए जाते हैं, और वह कमजोर हो जाता है, पलिश्तियों द्वारा बन्दी बनाया जाता है, और उनके खम्भों को नीचे गिराकर मर जाता है (16:1–31) ।

यहोशू के मरने के पश्चात, न्यायियों ने इस्राएल के शासक और सेना के मार्गदर्शकों के रूप में सेवा की । उनका शासन अधिकतर दुखद था जब इस्राएल को धर्मत्याग, दासता, पश्चाताप, और कई बार छुड़ाए जाने से गुजरना पड़ा था । इस इतिहास के दुखद भाग नेक न्यायियों की कहानियां हैं जैसे कि दबोरा और गिदोन, जो सच्चे बने रहे और अपने लोगों को मुक्त कराने में विश्वास और साहस का उपयोग किया ।

- एक सच्चा मित्र होने के विषय में हम दबोरा से क्या सीख सकते हैं ? किस प्रकार आपके मित्रों ने चुनौतियों का सामना करने में या प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने में आपकी सहायता की है ? हम दूसरों के लिए अच्छा मित्र कैसे हो सकते हैं ?

- एक नाजीर और इस्राएल के घराने के सदस्य के रूप में, शिमशोन ने प्रभु के साथ अनुबन्ध बनाए थे । हम प्रभु के साथ कौन सा अनुबन्ध बनाते हैं ? इन अनुबन्धों ने आपको कैसे मजबूत किया है ?

- शिमशोन के उसके अनुबन्धों के प्रति उल्लंघन के क्या परिणाम थे ? (देखें न्यायियों 16:17–21) । जब हम अपने अनुबन्धों का उल्लंघन करते हैं तो उसके क्या परिणाम होते हैं ?

अतिरिक्त पठनः ''न्यायियों'' और ''न्यायियों, किताब का'', बाइबिल शब्दकोष, पृष्ठ 719–20 ।

''नगर के सब लोग...जानते हैं कि तू भली स्त्री है'' 20

रूत; 1 शमूएल 1

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. रूत 1–2। अपने पति की मृत्यु के पश्चात, रूत अपनी सास, नाओमी के साथ बेतलेहम जाती है। बेतलेहम में, रूत बोअज के खेतों में काम करती है, जो उसके साथ उदारता का व्यवहार करता है।

ख. रूत 3–4। रूत बोअज के पावों के पास लेटी रही, और वह उससे विवाह करने की प्रतिज्ञा करता है। फिर वे विवाह करते हैं और उनका एक बच्चा होता है।

ग. 1 शमूएल 1; 2:1–2, 20–21। हन्ना को एक पुत्र का आशीष प्राप्त होता है, जिसे वह प्रभु को दे देती है जैसा कि उसने वादा किया था। बाद में वह और पुत्रों से आशीषित होती है।

- नाओमी के साथ बेतलेहम जाने के लिए रूत ने क्या छोड़ा ? नाओमी के साथ जाने से रूत को क्या मिला ? (यीशु मसीह का सुसमाचार; देखें रूत 1:16)। सुसमाचार के प्रति बलिदान के विषय में हम रूत से क्या सीख सकते हैं ?
- आपके विचार से प्रभु की सेवा के लिए शमूएल को दे देने से हन्ना ने कैसा महसूस किया ? प्रभु हमसे उसे क्या देने को कहता है ? उसे देने के बारे में हमारा क्या व्यवहार होना चाहिए ?
- रूत, नाओमी, और हन्ना कौन से नेक गुणों का प्रदर्शन करती हैं ?

परमेश्वर उन्हें सम्मान देगा जो उसे सम्मान देते हैं 21

1 शमूएल 2–3; 8

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. 1 शमूएल 2:12–17, 22–25। एली के पुत्र उल्लंघन करते हैं और उनका पिता उन्हें सलाह देता है।

ख. 1 शमूएल 2:27–36; 3:12–14। परमेश्वर का एक मनुष्य एली को उसके परिवार द्वारा किए गए दुष्टता के परिणामों के बारे में सावधान करता है।

ग. 1 शमूएल 3। प्रभु शमूएल को बुलाता है, और शमूएल जबाव देता है।

घ. 1 शमूएल 8। इस्राएली एक राजा चाहते हैं ताकि वे भी ''सब जातियों के समान हो जाएं''। शमूएल इस प्रकार के चुनाव के खतरों से उन्हें सावधान करता है।

- एली के पुत्रों की क्रियाएं क्या सलाह देती हैं कि उन्होंने किसका आदर करना चुना था ? (देखें 1 शमूएल 2:12–17, 22–25)। हमारे जीवन के कौन से कुछ क्षेत्र हैं जिनका हम कभी-कभी आदर करते हैं और प्रभु की बजाय स्वयं को प्रसन्न करते हैं ?
- परमेश्वर का एक मनुष्य आया और उसने एली को दण्ड दिया, यह कहते हुए कि एली ने अपने पुत्रों का आदर परमेश्वर से अधिक किया था (1 शमूएल 2:27–29)। किन तरीकों से एली ने परमेश्वर से अधिक अपने पुत्रों का आदर किया था ? कभी-कभी हम किस प्रकार परमेश्वर से अधिक अन्य लोगों का आदर करते हैं ?
- शमूएल प्रभु का आदर किस प्रकार करता है ? प्रभु उसका आदर किस प्रकार करता है ? (देखें 1 शमूएल 3:19; 1 शमूएल 2:30 भी देखें)। आपके विचार से प्रभु हमारा आदर किस प्रकार करेगा यदि हम उसका आदर करते हैं ?

''यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है''
1 शमूएल 9–11; 13; 15–17

22

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. 1 शमूएल 9–11। शाऊल शमूएल से मार्गदर्शन प्राप्त करता है (9:1–14, 18–24)। प्रभु शमूएल पर प्रकट करता है कि शाऊल राजा बनेगा (9:15–17)। शमूएल शाऊल को सलाह देता है और इस्राएल के पहले राजा के रूप में उसका अभिषेक करता है (9:25–27; 10:1–8)। आत्मिक तौर पर शाऊल का पुनर्जन्म होता है, और वह भविष्यवाणी करता है (10:9–13)। शमूएल शाऊल को लोगों के सामने प्रस्तुत करता है (10:17–27)। एक युद्ध में शाऊल इस्राएल को जीत दिलाता है (11:1–11)। वह उन लोगों को दण्डित करने से मना कर देता है जिन्होंने लोगों के मार्गदर्शन के प्रति उसकी क्षमता पर संदेह किया था (11:12–15)।

ख. 1 शमूएल 13:1–14। बिना उचित अधिकार के शाऊल एक होमबलि चढ़ाता है।

ग. 1 शमूएल 15। शाऊल को आज्ञा दी जाती है कि वह अमालेकियों और उनकी संपत्तियों का नाश कर दे, परन्तु बलि चढ़ाने के लिए वह उनके कुछ जानवरों को छोड़ देता है (15:1–9)। प्रभु शाऊल को राजा के रूप में अस्वीकार करता है, और शमूएल शाऊल को बताता है कि आज्ञाकारिता बलि से बेहतर है (15:10–35)।

घ. 1 शमूएल 16। शाऊल का उत्तराधिकारी होने के लिए प्रभु दाऊद को चुनता है (16:1–13)। पवित्र आत्मा शाऊल से अलग हो जाता है और एक दुष्ट आत्मा उस पर अपना अधिकार जमा लेती है (16:14–16; ध्यान दें कि जोसफ स्मिथ अनुवाद में ये आयतें दिखाती हैं कि दुष्ट आत्मा परमेश्वर की तरफ से *नहीं* थी)। शाऊल अपने लिए वीणा बजाने और अपना हथियार ढोनेवाला बनाने के लिए दाऊद को चुनता है (16:17–23)।

च. 1 शमूएल 17। प्रभु के बल में दाऊद गोलियत का वध करता है।

- अमालेकियों के जानवरों को छोड़ने के शाऊल के स्पष्टिकरण पर शमूएल किस प्रकार प्रतिक्रिया दिखाता है ? (देखें 1 शमूएल 15:22)। शमूएल के शब्द हम पर किस प्रकार लागू होते हैं ?

- शमूएल क्या जानता है जब वह निश्चय करने का प्रयास करता है कि यिशै के कौन से पुत्र को राजा के रूप में शाऊल का उत्तराधिकारी होना चाहिए ? (देखें 1 शमूएल 16:6–7)। प्रभु हमारा किस प्रकार मूल्यांकन करता है इसके बारे में 1 शमूएल 16:7 क्या सीखाता है ? प्रभु हमारे मन में क्या देखता है ? बाहरी दिखावे से आगे बढ़कर दूसरों के मन में देखने के लिए हम अपनी क्षमता और समर्पणता को कैसा बढ़ा सकते हैं ?

- दाऊद गोलियत से लड़ने का साहस किस प्रकार प्राप्त करता है ? (देखें 1 शमूएल 17:32–37, 45–47)। प्रभु ने आपकी किस प्रकार सहायता की है उन ''गोलियतों'' से लड़ने में जिनका आपने सामना किया है ?

अतिरिक्त पठन: 1 शमूएल 12; 14

''यहोवा मेरे और तेरे मध्य में सदा रहे''
1 शमूएल 18–20; 23–24

23

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. 1 शमूएल 18:1–16। योनातन और दाऊद मित्रता का एक अनुबन्ध बनाते हैं (18:1–4)। युद्ध में सफलता के लिए इस्राएली दाऊद का सम्मान करते हैं (18:5–7)। शाऊल दाऊद से ईर्ष्या करने लगता है और उसे मारने का प्रयास करता है (18:8–16; ध्यान दें कि आयत 10 का जोसफ स्मिथ अनुवाद सूचित करता है कि जो दुष्ट आत्मा शाऊल पर आई थी वह परमेश्वर की तरफ से *नहीं* थी)।

ख. 1 शमूएल 18:17–30; 19:1–18। शाऊल के बेटी से विवाह के अधिकार को प्राप्त करने के लिए दाऊद पलिश्तियों से लड़ता है, इस बात से अनभिज्ञ होते हुए कि शाऊल आशा करता है कि दाऊद युद्ध में मारा जाएगा (18:17–25)। दाऊद पलिश्तियों पर विजय प्राप्त करता है और शाऊल की बेटी मीकल से विवाह करता है (18:26–28)। योनातन दाऊद को छुपने के लिए कहता है और शाऊल को मनाने का प्रयास करता है कि वह उसे न मारे (19:1–7)। दाऊद को मारने के अन्य प्रयास में शाऊल असफल हो जाता है (19:9–10)। मीकल दाऊद को शाऊल के एक और अन्य प्रयास से बचाती है जिसमें वह उसे मारने का प्रयास करता है (19:11–18)।

ग. 1 शमूएल 20। योनातन और दाऊद मित्रता और शान्ति के अपने अनुबन्धों का नवीनीकरण करते हैं। जब फिर से शाऊल दाऊद को मारने का प्रयास करता है, योनातन दाऊद को चेतावनी देता है।

घ. 1 शमूएल 23–24। दाऊद पलिश्तियों से लड़ना जारी रखता है और शाऊल को भगा देता है। दाऊद शाऊल को खोज निकालता है और उसे जीवनदान देता है।

- आपके विचार से योनातन दाऊद से ईर्ष्या क्यों नहीं करता है या दाऊद उसे धमकी क्यों नहीं देता है ? (1 शमूएल 18:1, 3)।
- किसने शाऊल को दाऊद के विरूद्ध किया ? (देखें 1 शमूएल 18:6–9)। दूसरों की सफलता पर कभी-कभी खुश होना कठिन क्यों हो जाता है ? ईर्ष्या और घमंड हमारी आत्मिकता को किस प्रकार प्रभावित करते हैं ?
- किस प्रकार परमेश्वर में विश्वास ने योनातन और दाऊद की मित्रता को प्रभावित किया था ? (देखें 1 शमूएल 20:23)। किस प्रकार परमेश्वर के प्रति हमारा प्रेम दूसरों के लिए हमारे प्रेम को प्रभावित करता है ?
- बदले की भावना के बारे में दाऊद का उदाहरण हमें क्या सीखाता है ? (देखें 1 शमूएल 24:6–15)।

अतिरिक्त पठन: 1 शमूएल 14:1–16; 2 शमूएल 1।

''मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर''
2 शमूएल 11–12; भजन संहिता 51

24

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. 2 शमूएल 11। दाऊद ऊरिय्याह की पत्नी बेतशेबा के साथ व्यभिचार करता है (11:1–5)। दाऊद अपने पापों को छुपाने के प्रयासों में असफल हो जाता है (11:6–13)। वह ऊरिय्याह की मृत्यु का प्रबंध करता है (11:14–17)। दाऊद बेतशेबा से विवाह करता है, और उनका एक पुत्र होता है (11:26–27)।

ख. 2 शमूएल 12:1–23। दाऊद को एक दृष्टांत सुनाकर नातान दाऊद के पापों की गंभीरता के विषय में उसे सीखाता है (12:1–6)। दाऊद से कहा जाता है कि उसे उसके पापों के कारण दण्ड मिलेगा (12:7–14; ध्यान दें कि आयत 13 के जोसफ स्मिथ अनुवाद में, नातान कहता है, ''प्रभु ने तेरे पाप को दूर नहीं किया है कि तू न मर सके'')। दाऊद और बेतशेबा का पहला पुत्र बचपन में मर जाता है (12:15–23)।

ग. भजन संहिता 51। पश्चातापी दाऊद क्षमा प्राप्त करना चाहता है।

दाऊद राजा के रूप में शाऊल का उत्तराधिकारी होता है और इस्राएल के इतिहास में पाए जानेवाले महान राजाओं में से एक बन जाता है। वह जातियों को एक राष्ट्र के रूप में इकट्ठा करता है, धरती की उन संपत्तियों को बचाता है जिसका वादा उसके लोगों के लिए हो चुका होता है, और परमेश्वर की व्यवस्था पर आधारित एक सरकार का संगठन करता है। यद्यपि उसके व्यक्तिगत जीवन का आखिरी 20 वर्ष उसके पाप के परिणामों द्वारा बिगड़ जाता है।

- दाऊद ने ऐसा क्या किया जो उसे व्यभिचार की तरफ ले गया था ? (देखें 2 शमूएल 11:2–4)। किस चीज के कारण लोग यौन पाप के प्रलोभन में पड़ते हैं ? यौन पाप के प्रलोभन में पड़ने से बचने के लिए हम क्या कर सकते हैं ?
- अपनी अनैतिकता को छुपाने के प्रयासों में दाऊद और कौन से गंभीर पाप करता है ? (देखें 2 शमूएल 11:14–17)। आपके विचार से दाऊद ने अपने पापों को किससे छुपाने के बारे में सोचा था ? आज लोग किस प्रकार पापों को छुपाने का प्रयास करते हैं ? क्या होता है जब हम अपने पापों को छुपाने का प्रयास करते हैं ?

भजन संहिता में प्रभु से, दाऊद दूसरों के पश्चाताप में सहायता करने की अपनी इच्छा व्यक्त करते हुए कहता है, ''तब मैं अपराधियों को तेरा मार्ग सिखाऊँगा, और पापी तेरी ओर फिरेंगे'' (भजन संहिता 51:13)। यहां तक कि दाऊद को अपने उत्कर्ष का जुर्माना देना पड़ा क्योंकि उसने ऊरिय्याह की मृत्यु का प्रबंध किया था, हम उसके पश्चातापी व्यवहार के बारे में सीख सकते हैं जब वह व्यभिचार के पाप के लिए क्षमादान चाहता है। भजन संहिता 51 के उसके शब्द सच्चे पश्चाताप के कई पहलुओं के बारे में सीखाते हैं। जब आप भजन संहिता का अध्ययन करते हैं, उन तरीकों को खोजें जिससे आप अपने जीवन में दाऊद के पश्चातापी उदाहरण को लागू कर सकें।

अतिरिक्त पठनः 2 शमूएल 2–10।

''जितने प्राणी हैं सब के सब याह की स्तुति करें''

भजन संहिता

25

यहां पर चर्चित धर्मशास्त्रों का और जितना आप कर सकें उतना भजन संहिता की पुस्तक का अध्ययन करें।

भजन संहिता की पुस्तक उन कविताओं का संग्रह है जिसे वास्तव में परमेश्वर की बड़ाई या विनती के रूप में गाया गया था। इनमें से अधिकतर दाऊद द्वारा लिखी गई हैं। यह किताब प्राचीन इस्राएल के स्तुतिगीत के समान है।

कई भजन संहिताएं मसीह के मसीहा के रूप में मिशन की भविष्यवाणी करती हैं। भजन संहिता की पुस्तक में मसीह के बारे में लिखी गई निम्नलिखित भविष्यवाणियों की परिपूर्णता पर ध्यान दें:

भविष्यवाणी	परिपूर्णता
भजन संहिता 69:20	मरकुस 14:32–41
भजन संहिता 22:7–8	मत्ती 27:39–43
भजन संहिता 22:16	मरकुस 15:25
भजन संहिता 22:18	मत्ती 27:35
भजन संहिता 22:1	मत्ती 27:46
भजन संहिता 16:10	प्रेरितों के काम 2:31–32; 13:34–35

निम्नलिखित भजन संहिताओं को पढ़ें जो उद्धारकर्ता को उसकी दया, क्षमादान, और प्रेम के लिए आभार प्रकट करती हैं: भजन संहिता 23; 51; 59:16; 78:38; 86:5, 13; 100:4–5; 103:2–4, 8–11, 17–18।

निम्नलिखित भजन संहिताओं को पढ़ें जो प्रभु में विश्वास की महत्वपूर्णता की शिक्षा देती हैं: भजन संहिता 4:5; 5:11; 9:10; 18:2; 56:11; 62:8; 118:8–9।

मन्दिर के विषय में निम्नलिखित भजन संहिताओं को पढ़ें: भजन संहिता 5:7; 15:1–3; 24; 27:4; 65:4; 84:1–2, 4, 10–12; 122; 134।

राजा सुलैमानः ज्ञान का मनुष्य, मूर्खता का मनुष्य
1 राजा 3; 5–11

26

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. 1 राजा 3:5–28। सुलैमान राजा के रूप में अपने पिता दाऊद का उत्तराधिकारी होता है, और प्रभु का अनुसरण करता है। प्रभु सुलैमान को दिखाई देता है और उसे बुद्धि और ज्ञान, धन, और सम्मान का आशीष देता है (3:5–15)। दो स्त्रियां अपने बच्चे को सुलैमान के पास ले जाती हैं, जो कि बुद्धिमानीपूर्वक निश्चय करता है कि कौन सी स्त्री बच्चे की मां है (3:16–28)।

ख. 1 राजा 5–6; 7:1–12। राजा सुलैमान एक महान मन्दिर के निर्माण-कार्य का आदेश देता है (5–6)। वह अपने लिए एक महल बनवाता है (7:1–12)।

ग. 1 राजा 8:22–66; 9:1–9। सुलैमान मन्दिर को समर्पित करता है और प्रभु से इस्राएलियों के लिए आत्मिक और लौकिक संपन्नता की आशीष मांगता है (8:22–66)। प्रभु फिर से सुलैमान को दिखाई देता है, इस्राएलियों को आशीष देने की प्रतिज्ञा करता हुआ यदि वे उसकी सेवा करें परन्तु उन्हें श्राप देने की प्रतिज्ञा करता है यदि वे दूसरे परमेश्वरों की सेवा करेंगे (9:1–9)।

घ. 1 राजा 10–11। सुलैमान का यश उसके धन और ज्ञान के कारण बढ़ता है (10:1–13, 24–25)। वह बहुत ही धनवान बन जाता है (10:14–23, 26)। वह कई गैर-इस्राएली स्त्रियों से विवाह करता है जो उसे झूठे परमेश्वरों की उपासना के लिए उकसाती हैं (11:1–10)। प्रभु सुलैमान के खिलाफ विरोध उत्पन्न करता है (11:11–25)। एक भविष्यवक्ता भविष्यवाणी करता है कि सुलैमान की दुष्टता के कारण इस्राएल का राज्य विभाजित होगा (11:26–40)।

- एक ''समझदार मन'' का क्या अर्थ है ? (देखें 1 राजा 3:28; 4:29)। उस आशीष की सुलैमान को एक विशेष आवश्यकता क्यों महसूस हुई ? (देखें 1 राजा 3:7–8)। किस प्रकार ''परमेश्वर की बुद्धि'' घर में, काम पर, विद्यालय में, गिरजाघर में हमारी जिम्मेदारियों में हमारी सहायता कर सकती है ? किस प्रकार हम इस ज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं ?
- मन्दिर के विषय में प्रभु सुलैमान से क्या प्रतिज्ञा करता है ? (देखें 1 राजा 6:11–13)। प्रभु आज हमसे इसी प्रकार की कौन सी प्रतिज्ञा करता है ? (देखें सि. और अनु. 97:15–17)। अपने जीवन में मजबूती से मन्दिर के प्रभाव को बनाए रखने के लिए हम क्या कर सकते हैं ?
- किस प्रकार मन्दिर के निर्माण के पश्चात सुलैमान का धन और सम्मान बढ़ता है ? (देखें 1 राजा 10:1–15, 24–25)। सुलैमान इन आशीषों का दुरुपयोग किस प्रकार करता है ? (देखें 1 राजा 10:16–23, 26–29)। किस प्रकार ज्ञान, धन, और सम्मान का उपयोग होना चाहिए ? (देखें याकूब 2:18–19)।

अतिरिक्त पठनः 1 राजा 2:1–12; 4:29–34; 7:13–51; 1 इतिहास 29; सिद्धान्त और अनुबन्ध 46।

दुष्ट और नेक मार्गदर्शकों का प्रभाव
1 राजा 12–14; 2 इतिहास 17; 20

27

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. 1 राजा 12:1–20। इस्राएल की बारह जातियों पर राजा के रूप में रहूबियाम अपने पिता सुलैमान का उत्तराधिकारी होता है। अपने लोगों का दास बनकर रहने के प्रति वह ज्ञानी लोगों की सलाह को अस्वीकार करता है, इसकी बजाय उन पर अधिक भार डालते हुए (12:1–15)। राज्य दस गोत्रों के विद्रोह के रूप में विभाजित होता है (12:16–19; दस गोत्र इस्राएल के राज्य के तहत रहते हैं, जब कि यहूदा और बिन्यामीन के गोत्र रहूबियाम के शासन के तहत रह जाते हैं और यहूदा के राज्य कहलाते हैं)। इस्राएल का राज्य यारोबाम को अपने राजा के रूप में चुनता है (12:20)।

ख. 1 राजा 12:25–33; 13:33–34; 14:14–16, 21–24। यारोबाम अपने लोगों को मूर्ति पूजा की तरफ ले जाता है (12:25–33; 13:33–34)। एक भविष्यवक्ता यारोबाम के घराने के नाश की और इस्राएल के तितर-बितर होने की भविष्यवाणी करता है (14:14–16)। रहूबियाम यहूदा के राज्य को मूर्ति पूजा की तरफ ले जाता है (14:21–24)।

ग. 2 इतिहास 17:1–10; 20:1–30। यहोशापात, रहूबियाम का पड़पोता यहूदा के राज्य पर नेकता से शासन करता है (17:1–10)। जैसे-जैसे यहूदा के शत्रु उन पर चढ़ाई करते हैं, यहोशापात और उसके लोग उपवास और प्रार्थना करते हैं। प्रभु उनसे कहता है कि युद्ध उनका नहीं है, परन्तु उसका है। उन पर चढ़ाई करनेवाले आपस में ही लड़ते हैं और एक दूसरे का नाश करते हैं (20:1–30)।

- सफलतापूर्वक शासन करने के बारे में बूढ़े लोग रहूबियाम को क्या सलाह देते हैं ? (देखें 1 राजा 12:6–7; 2 इतिहास 10:7)। हम इस सलाह को घर पर, विद्यालय में, और गिरजाघर में कैसे लागू कर सकते हैं ?

- यहोशापात ने यहूदा के लोगों को प्रभु के समक्ष स्वयं को विनम्र करने के लिए प्रभावित किया था (2 इतिहास 20:3–4)। धार्मिक नेतृत्व का कौन सा उदाहरण आपने देखा है ? हम उन लोगों को प्रभावित करने के लिए क्या कर सकते हैं जिनकी सेवा हम नेकता से जीवन व्यतीत करने के लिए करते हैं ?

अतिरिक्त पठनः 1 राजा 11:26–40; 2 राजा 17:20–23।

''आग के बाद एक दबा हुआ धीमा शब्द''
1 राजा 17–19

28

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. 1 राजा 17। एलिय्याह बारिश के विरूद्ध स्वर्गों को मुहरबन्द करता है, अहाब और ईज़ेबेल से भागता है, और चमत्कारिक तौर पर जंगल में उसे सहारा मिलता है (17:1–6)। प्रभु एलिय्याह को एक विधवा के पास भेजता है जो उसे खाना और पानी देती है (17:7–16)। एलिय्याह विधवा के बेटे को मृत्यु से जिन्दा करता है (17:17–24)।

ख. 1 राजा 18। अकाल के दो वर्षों से भी अधिक समय के पश्चात, एलिय्याह अहाब से मिलता है और बाल के याजकों को उनकी बलि को स्वीकार करने के लिए स्वर्ग से आग को नीचे बुलाने की चुनौती देता है (18:1–2, 17–24)। बाल के याजक असफल हो जाते हैं, परन्तु एलिय्याह प्रार्थना करता है और प्रभु आग को नीचे भेजता है उस बलि को स्वीकार करने के लिए जिसे उसने तैयार किया था (18:25–40)। एलिय्याह अकाल को खत्म करने के लिए प्रार्थना करता है, और प्रभु बारिश करता है (18:41–46)।

ग. 1 राजा 19। ईज़ेबेल एलिय्याह को मारने का प्रयास करती है (19:1–2)। एलिय्याह जंगल में छुप जाता है और एक दूत उसे खाना खिलाता है (19:3–8)। एलिय्याह पर्वत होरेब पर जाता है, जहां उसे पवित्र आत्मा द्वारा सांत्वना और परमेश्वर के कार्य को जारी रखने का निर्देश प्राप्त होता है (19:9–19)।

यारोबाम द्वारा इस्राएल को व्यभिचार में डालने के पश्चात, उसका और उसके वंशजों का नाश हो गया। उनके पश्चात अन्य व्यभिचारी राजा उत्तराधिकारी हुए। उन शासकों में से, अहाब एक ऐसा राजा था जिसने, ''उन सब इस्राएली राजाओं से बढ़कर जो उस से पहिले थे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोध दिलाने का काम किया'' (1 राजा 16:33)। उसने ईज़ेबेल से विवाह किया, बाल उपासना की उसकी प्रथा को अपनाया, और इस झूठे परमेश्वर की उपासना में उसका साथ देने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया। भविष्यवक्ता एलिय्याह ने अहाब और उसके राज्य को चेतावनी दी।

- आपके विचार से प्रभु ने गरीब विधवा को स्वयं और अपने बेटे को खिलाने से पहले एलिय्याह को खिलाने की आज्ञा क्यों दी ? (देखें 1 राजा 17:14–16)। किन तरीकों से हमसे हमारे जीवन में परमेश्वर की चीजों को पहले रखने के लिए कहा जाता है ?

- एलिय्याह को सुनने के लिए जब लोग कर्मेल पर्वत पर एकत्रित हुए, उसने पूछा, ''तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे ?'' (1 राजा 18:21)। कभी-कभी हम किस प्रकार दो विचारों में लटके रहते हैं ?

- पर्वत होरेब पर परमेश्वर ने एलिय्याह को किस प्रकार सांत्वना दी ? (देखें 1 राजा 19:9–13) । इससे हम क्या सीख सकते हैं कि परमेश्वर हमसे किस प्रकार वार्तालाप करता है ? आपके विचार से परमेश्वर जोर और शक्ति के प्रभावशाली प्रदर्शन की बजाय पवित्र आत्मा की ''शान्त धीमी आवाज'' द्वारा अक्सर बातचीत क्यों करता है ? किस प्रकार हम पवित्र आत्मा की फुसफुसाहटों को पहचान सकते हैं ?

''उसने उठाया...एलिय्याह की चद्दर को'' 29
2 राजा 2; 5–6

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. 2 राजा 2:1–18 । नया भविष्यवक्ता बनाने के लिए एलिय्याह एलीशा को तैयार करता है (2:1–10) । एलिय्याह स्वर्ग में उठा लिया जाता है । एलीशा एलिय्याह की चद्दर लेता है और भविष्यवक्ता बनता है (2:11–15) । एलीशा की सलाह के बावजूद पचास लोग तीन दिनों तक एलिय्याह को खोजते हैं (2:16–18) ।

ख. 2 राजा 5 । एलीशा नामान को कोढ़ से चंगा करता है (5:1–14) । नामान परमेश्वर की बड़ाई करता है और एलीशा को एक भेंट देता है, जिसे लेने से एलीशा इन्कार कर देता है (5:15–19) ।

ग. 2 राजा 6:8–18 । एलीशा अराम के साथ युद्ध में इस्राएल के राजा का मार्गदर्शन करता है (6:8–10)। अराम का राजा अपने लोगों को एलीशा को बन्दी बनाने की आज्ञा देता है, और सेना दोतान के नगर को चारों तरफ से घेर लेती है (6:11–14) । निडर होकर, एलीशा प्रार्थना करता है, और प्रभु ने घोड़ों और रथों से भरे हुए एक पहाड़ को प्रकट किया, फिर अन्धा करके अरामी सेना का नाश किया (6:15–18) ।

- नामान की कहानी हमें भविष्यवक्ता की सलाह का अनुसरण के बारे में क्या सीखा सकती है—तब भी जब हम उसे पसन्द न करते हों या उसे समझते न हों या जब छोटी या साधारण सी बात हो ? कौन सी कुछ छोटी, साधारण सी बात है जिसे हमें भविष्यवक्ता या गिरजाघर के अन्य मार्गदर्शकों ने करने के लिए कहा हो ? कभी-कभी इन चीजों को करना कठिन क्यों होता है ? गिरजाघर के मार्गदर्शकों की सलाह का अनुसरण करने की अपनी इच्छा को हम कैसे बढ़ा सकते हैं ?
- एलीशा का क्या अर्थ था जब उसने अपने सेवकों से कहा, ''जो हमारी ओर हैं, वह उन से अधिक हैं, जो उनकी ओर हैं'' (2 राजा 6:16) । आपने किस प्रकार देखा है कि एलीशा का वक्तव्य आज भी सही है ?

''यहोवा के भवन में आओ'' 30
2 इतिहास 29–30; 32; 34

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. 2 इतिहास 29–30 । यहिजकिय्याह, यहूदा का राजा मन्दिर के दरवाजों को खोलता है और याजकों और लेवियों को इसे साफ करने और उपासना के लिए इसे पवित्र करने का आदेश दिया (29:1–19) । जब मन्दिर साफ हो गया, यहिजकिय्याह और उसके लोगों ने एक साथ उपासना और प्रभु की बड़ाई की (29:20–36) । यहिजकिय्याह यरूशलेम के मन्दिर में पूरे इस्राएल को आने का निमंत्रण देता है (30:1–9) । कुछ लोग निमंत्रण पर हंसते हैं, परन्तु इस्राएल के विश्वासी लोग यरूशलेम में प्रभु की उपासना करते हैं (30:10–27) ।

ख. 2 इतिहास 32:1–23 । अश्शूर का राजा सन्हेरीब, यहूदा पर हमला बोल देता है और प्रभु के विरूद्ध बातें करता है (32:1–19) । यशायाह और हिजकिय्याह सहायता के लिए प्रार्थना करते हैं, और प्रभु का एक दूत अश्शूरियों की सेना को बहुत नुकसान पहुँचाता है (32:20–23) ।

ग. 2 इतिहास 34 । दुष्ट लोगों पर हिजकिय्याह के पुत्र और पोते के शासन के पश्चात, हिजकिय्याह का पड़पोता योशिय्याह यहूदा का राजा बनता है । योशिय्याह राज्य की मूर्तियों को हटवा देता है और मन्दिर की मरम्मत करवाता है (34:1–13) । मन्दिर में व्यवस्था की किताब पाई जाती है और योशिय्याह के लिए उसे पढ़ा जाता है, जो कि रोता है जब उसे

पता चलता है कि लोग व्यवस्था से कितनी दूर हो गए थे (34:14–21)। हुल्दा नबिया यहूदा पर आनेवाली तबाही के विषय में बताती है परन्तु भविष्यवाणी करती है कि योशिय्याह इस सब चीजों की साक्षी नहीं देगा (34:22–28)। योशिय्याह और उसके लोग प्रभु की सेवा का अनुबन्ध बनाते हैं (34:29–33)।

- अपने स्वयं के प्रयासों और प्रभु में विश्वास के बीच के उचित संबंध के बारे में हम हिजकिय्याह से क्या सीख सकते हैं ? (देखें 2 इतिहास 32:7–8)।

- जब योशिय्याह और उसके लोग मन्दिर में थे, उन्होंने क्या करने का अनुबन्ध बनाया था ? (देखें 2 इतिहास 34:31–33)। पवित्र मन्दिर के अनुबन्धों को बनाने के लिए हम किस प्रकार तैयारी कर सकते हैं ? एक बार जब हमने इन अनुबन्धों को बना लिया, यह महत्वपूर्ण क्यों हो जाता है कि हम मन्दिर में उतनी बार जाएं जितनी बार संभव हो सके ?

अतिरिक्त पठनः 2 राजा 18–19; 22–23; यशायाह 37:10–20, 33–38।

''क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो बुद्धि पाए''

31

नीतिवचन और सभोपदेशक

यहां पर चर्चित धर्मशास्त्रों का और जितना आप कर सकें उतना नीतिवचन और सभोपदेशक का अध्ययन करें।

साधारणतः नीतिवचन छोटे-छोटे कथन हैं जो नेकता से जीवन व्यतीत करने की सलाह देते हैं। पुराना नियम बताता है कि सुलैमान ने ''तीन हजार नीतिवचन कहे'' (1 राजा 4:32)। इनमें से कुछ समझ देनेवाली कथनों को नीतिवचन की पुस्तक में सम्मिलित किया गया है। यद्यपि सुलैमान और इस पुस्तक के अन्य लेखक भविष्यवक्ता नहीं थे, जिसे उन्होंने लिखा था उनमें से अधिकतर प्रभु द्वारा प्रेरित था। सभोपदेशक की पुस्तक में समझ देनेवाले कथन भी सम्मिलित हैं, और कुछ लोगों का विश्वास है कि सुलैमान इसका लेखक है।

- नीतिवचन और सभोपदेशक की पुस्तकें बुद्धि की महत्वपूर्णता पर बल देती हैं। ज्ञानी और बुद्धिमान होने के बीच क्या अन्तर है ? (देखें नीतिवचन 1:7; 9:9–10; 2 नफी 9:28–29)।

- नीतिवचन में कौन सा सलाह दिया गया है 3:5–7 ? किस अनुभव ने आपको प्रभु में विश्वास करना सीखाया है ?

- जो शब्द हम कहते हैं उससे प्रभु क्यों चिन्तित होता है ? (देखें नीतिवचन 16:27–28; 18:8; 25:18; मत्ती 12:36–37)। झूठ बोलने, गपशप करने, या दूसरों के बारे में नकारात्मक बोलने की समस्याओं से हम किस प्राकर उबर सकते हैं ?

- नीतिवचन 13:10 और 16:18 सीखाते हैं कि घमंड विवाद और विनाश की तरफ ले जाता है। घमंड ऐसा कैसे कर सकता है ? घमंड हमारे परिवारों को किस प्रकार प्रभावित करता है ?

- नीतिवचन 22:6 ''लड़के को शिक्षा उसी मार्ग की देने के लिए कहता है जिस में उसको चलना चाहिए।'' इस सलाह का अनुसरण करने के लिए माता-पिता को क्या करना चाहिए ? (देखें सि. और अनु. 68:25–28)। किस प्रकार माता-पिता अधिक प्रभावपूर्ण तरीके से बच्चों को सुसमाचार के सिद्धान्तों की शिक्षा दे सकते हैं ?

- एक आनन्दित मन और मन का आनन्द बढ़ाना क्यों महत्वपूर्ण है ? (देखें नीतिवचन 15:13; 17:22)। अपने परिवारों में आनन्द को बढ़ाने के प्रोत्साहन के लिए हम क्या कर सकते हैं ?

''मुझे तो निश्चय है, कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है''
अय्यूब 1–2; 13; 19; 27; 42

32

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. अय्यूब 1–2। अय्यूब गंभीर कष्टों का अनुभव करता है। अपनी संपत्ति, बच्चे, और स्वास्थ्य को खो देने के पश्चात वह प्रभु के प्रति विश्वासी रहता है।

ख. अय्यूब 13:13–16; 19:23–27। अय्यूब प्रभु में विश्वास और उद्धारकर्ता की अपनी गवाही के लिए बल प्राप्त करता है।

ग. अय्यूब 27:2–6। अय्यूब अपनी व्यक्तिगत नेकता और निष्ठा में बल प्राप्त करता है।

घ. अय्यूब 42:10–17। अय्यूब द्वारा परेशानियों को अन्त तक झेलने के पश्चात, प्रभु उसे आशीष देता है।

- अय्यूब किस प्रकार का मनुष्य था ? अय्यूब ने किन कष्टों का अनुभव किया ?
- किस प्रकार उद्धारकर्ता की अय्यूब की गवाही ने अन्त तक परेशानियों को सहने में उसकी सहायता की थी ? (देखें अय्यूब 19:25–27)। किस प्रकार उद्धारकर्ता की गवाही परेशानी के समय में बल प्रदान करती है ?
- अय्यूब की परेशानियों के दौरान उसकी निष्ठा आत्मिक बल का एक अन्य जरिया था (अय्यूब 27:2–6)। निष्ठा क्या है ? व्यक्तिगत निष्ठा ने किस प्रकार अय्यूब की परेशानियों के दौरान उसे मजबूत किया था ? परेशानियों के समय में व्यक्तिगत निष्ठा किस प्रकार हमारी सहायता कर सकती है ?
- अय्यूब द्वारा विश्वासी रहते हुए कष्टों को अन्त तक झेलने के पश्चात, प्रभु ने उसे किस प्रकार आशीषित किया ? (देखें अय्यूब 42:10–15; याकूब 5:11)। प्रभु हमें किस प्रकार आशीषित करता है जब हम विश्वासी रहते हुए परेशानियों का अन्त तक सामना करते हैं ? (देखें अय्यूब 23:10; 3 नफी 15:9)।

अतिरिक्त पठनः अय्यूब के अन्य अध्याय; सिद्धान्त और अनुबन्ध 121:1–10।

संसार के साथ सुसमाचार बांटना
योना 1–4; मीका 2; 4–7

33

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. योना 1–2। प्रभु नीनवे के लोगों को पश्चाताप का प्रचार करने के लिए योना को नियुक्त करता है। योना एक जहाज पर बैठकर प्रभु से भागने का प्रयास करता है, एक मगरमच्छ द्वारा निगल लिया जाता है, प्रार्थना करता है, और मगरमच्छ के पेट से बाहर निकल आता है।

ख. योना 3–4। योना नीनवे के उलटने की भविष्यवाणी करता है और क्रोधित होता है जब नीनवे के लोग पश्चाताप करते हैं और प्रभु नगर को बचा लेता है (योना 3:9–10 का जोसफ स्मिथ अनुवाद समझाता है कि परमेश्वर ने नहीं, लोगों ने पश्चाताप किया)। प्रभु योना को सभी लोगों से प्रेम करना सीखाता है।

ग. मीका 2:12–13; 4:1–7, 11–13; 5:2–4, 7–8; 6:6–8; 7:18–20। मीका अन्तिम-दिनों में इस्राएल के काम की भविष्यवाणी करता है।

- प्रभु योना को नीनवे क्यों भेजना चाहता था ? (देखें योना 1:2)। इसकी बजाय योना तर्शीश क्यों गया ? (देखें योना 1:3)। कौन से कुछ कारण हैं जिससे हम सुसमाचार का प्रचार करना क्यों नहीं चुनते हैं ? योना की कहानी से हम क्या सीख सकते हैं जो प्रभु की आज्ञापालन और सुसमाचार के प्रचार में अधिक साहसी बनने में हमारी सहायता कर सकता है ?
- मीका अन्तिम-दिन के मन्दिर के बारे में क्या भविष्यवाणी करता है ? (देखें मीका 4:1–2)।
- मीका 6:6–8 किस प्रकार हमारी सहायता कर सकता है जब हम उन सबके द्वारा अभिभूत महसूस करते हैं जिसकी प्रत्याशा हमसे की जाती है ?

''नेकता में मैं तुझ से मंगनी करूँगा'' 34
होशे 1–3; 11; 13–14

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. होशे 1–3। एक विश्वासी पति और एक व्यभिचारिणी पत्नी के प्रतिरूपों का उपयोग करते हुए, भविष्यवक्ता होशे प्रभु और इस्राएल के बीच के संबंधों का वर्णन करता है। इन अध्यायों में होशे प्रभु को पति के रूप में, और गोमेर इस्राएल को पत्नी के रूप में प्रस्तुत करता है।

ख. होशे 11; 13–14। अपने लोगों के प्रति प्रेम के कारण, प्रभु निरन्तर इस्राएल को पश्चाताप करने और अपने पास वापस आने का निमंत्रण देता है।

- होशे 1–3 की तुलना समर्पणता के उस स्तर और भक्ति के बारे में क्या सीखाती है जिसकी प्रत्याशा प्रभु हमसे करता है ?
- इस्राएल की ''चाहनेवाले''—चीजें कौन या क्या हैं जिनके कारण लोग प्रभु से दूर हो गए ? कौन सी चीजें उद्धारकर्ता का अनुसरण करने की हमारी समर्पणता से हमें विमुख कर सकती हैं ?
- पति अपनी पत्नी से क्या प्रतिज्ञा करता है यदि वह उसके पास वापस आती है ? (देखें होशे 2:19)। प्रभु अपने लोगों से क्या प्रतिज्ञा करता है यदि वे पश्चाताप करेंगे और उसके पास वापस आएंगे ? (देखें होशे 2:20, 23)।

अतिरिक्त पठनः होशे का बाकी भाग

परमेश्वर अपना रहस्य अपने भविष्यवक्ताओं पर प्रकट करता है 35
आमोस 3; 7–9; योएल 2–3

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. आमोस 3:6–7। आमोस सीखाता है कि प्रभु अपने रहस्यों को भविष्यवक्ताओं पर प्रकट करता है।

ख. आमोस 7:10–17; 8:11–13; 9:8–15। परमेश्वर आमोस को एक भविष्यवक्ता नियुक्त करता है (7:10–15)। वह इस्राएल को बंधक बनाए जाने और उसके तितर-बितर की भविष्यवाणी करता है (7:16–17; 9:8–10)। वह भविष्यवाणी करता है कि प्रभु के वचनों को सुनने की प्यास होगी (8:11–13)। वह भविष्यवाणी करता है कि अन्तिम दिनों में इस्राएल महान होगा और उसमें फलने-फूलने वाले लोग होंगे (9:11–15)।

ग. योएल 2; 3:16–17। योएल अन्तिम दिनों के युद्धों और विपत्तियों के बारे में भविष्यवाणी करता है (2:1–11)। वह लोगों को पश्चाताप करने के लिए कहता है (2:12–14; ध्यान दें कि आयत 13 और 14 का जोसफ स्मिथ अनुवाद समझाता है कि लोगों को, न कि प्रभु को पश्चाताप करना था)। योएल भविष्यवाणी करता है कि अन्तिम दिनों में परमेश्वर अपने लोगों को आशीषित करेगा और उन पर अपनी आत्मा उंडेलेगा (2:15–32; 3:16–17)।

आमोस ने इस्राएल के राज्य के लोगों की सेवा लगभग 800 से 750 ई.पू. तक की। इनमें से अधिकतर लोग धर्मत्याग में थे। जब आमोस ने पाप में पड़े लोगों का सामना किया, उसने भीषण दण्डों की भविष्यवाणी की। तिस पर भी, उसने इस बात पर बल दिया कि परमेश्वर उस हर व्यक्ति को पापमुक्त करने का इच्छुक था जो पश्चाताप करेगा। आमोस ने अन्तिम-दिनों के बारे में भी भविष्यवाणी की थी।

योएल ने यहूदा के राज्य के लोगों की सेवा की थी। योएल की कई भविष्यवाणियां अन्तिम-दिनों के विषय में थीं।

- भविष्यवक्ता आमोस भविष्यवक्ताओं की महत्वपूर्णता के बारे में क्या सीखाता है ? (देखें आमोस 3:7)। सिद्धान्त और अनुबन्ध 1:37–38 हमें भविष्यवक्ताओं के संदेशों के बारे में क्या सीखाते हैं कि उनका आदर कैसे करना चाहिए ?
- भविष्यवक्ता आमोस ने क्या भविष्यवाणी की थी कि क्या परिणाम होगा यदि इस्राएल भविष्यवक्ताओं के संदेशों की उपेक्षा करता है या उसे अस्वीकारता है ? (देखें 8:11–13)। प्रभु के वचन की उपस्थिति की तुलना किस प्रकार से अकाल से की जा सकती है ?

किस प्रकार पुनःस्थापित सुसमाचार की आशीषों की तुलना एक पर्व्व से की जा सकती है ?

- योएल 2:12–32 और 3:16–17 की समीक्षा करें और निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर खोजें: अन्तिम-दिनों में रह रहे लोगों को प्रभु ने क्या निमंत्रण दिए हैं ? प्रभु ने उन लोगों से कौन सी प्रतिज्ञा की है जो अन्तिम-दिनों में उसका अनुसरण करते हैं ?

अतिरिक्त पठनः जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:41; सिद्धान्त और अनुबन्ध 1:14–28, 37–38 ।

सिय्योन की महिमा छायी रहेगी

यशायाह 1–6

36

यशायाह 1–6 का अध्ययन करें ।

यशायाह ने उद्धारकर्ता के पार्थिव मिशन के बारे में, उस विनाश के बारे में जो कि इस्राएल की दुष्टता के कारण होगा, और अन्तिम-दिनों के इस्राएल के मिशन और नियति के बारे में कई चीजों की भविष्यवाणी की थी ।

- यशायाह की चेतावनियों और भविष्यवाणियों में से कई दोनों ही समय पर लागू होती हैं, एक उसके समय पर जो कि महान दुष्टता का समय था, और हमारे समय पर भी । कौन सी कुछ परिस्थितियां आज संसार में प्रत्यक्ष हैं जिनका वर्णन यशायाह 1–5 में किया गया है ?
- यशायाह में कौन से तीन स्थानों का वर्णन किया गया है जो कि बुराई से सुरक्षा प्रदान करती हैं ? कैसे ये पवित्र स्थान हमें सुरक्षा प्रदान करेंगी, इन आयतों में इनका वर्णन करने के लिए किन अभिव्यक्तियों का उपयोग किया गया है ?

अतिरिक्त पठनः 2 नफी 11 ।

''तू ने आश्चर्य कर्म किए हैं''

यशायाह 22; 24–26; 28–30

37

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. यशायाह 22:22 । उद्धारकर्ता स्वर्गीय पिता की उपस्थिति के लिए दरवाजा खालेता है ।

ख. यशायाह 24:21–22 । उद्धारकर्ता उन लोगों के लिए दया दिखाता है जो आत्मा के बन्दीगृद में हैं ।

ग. यशायाह 25:1–4; 32:1–2 । उद्धारकर्ता बल और शरण है ।

घ. यशायाह 25:6–9 । उद्धारकर्ता एक पर्व्व की तैयारी करेगा और ''पर्दे'' का नाश करेगा ।

च. यशायाह 25:8 । उद्धारकर्ता हमारे आँसुओं को पोंछता है ।

छ. यशायाह 26:19 । उद्धारकर्ता पुनरुत्थान लाएगा ।

ज. यशायाह 28:16 । उद्धारकर्ता हमारा निश्चित आधार है ।

झ. यशायाह 29:4, 9–14, 18, 24 । उद्धारकर्ता पृथ्वी पर सुसमाचार की पुनःस्थापना करेगा ।

ट. यशायाह 30:19–21 । उद्धारकर्ता हमारी परेशानियों को जानता है और हमारे मार्गों को निर्देशित करता है ।

ठ. उद्धारकर्ता किस प्रकार ''[हमारे] आँसुओं को पोंछता है'' ? (यशायाह 25:8) ।

- यशायाह ने भविष्यवाणी की कि जब मसीहा आएगा, वह मरेगा और पुनरुत्थारित होगा (यशायाह 25:8) । और कौन पुनरुत्थारित होगा ? (देखें यशायाह 26:19; 1 कुरिन्थियों 15:20–22; अलमा 11:43–44) । यशायाह 26:19 क्या सुझाव देता है कि हमें कैसा महसूस होगा जब हमारा पुनरुत्थान होगा ? (सि. और अनु. भी देखें 138:12–16, 50) ।

यशायाह 29 की निम्नलिखित आयतों की तुलना अनुकूल अनुच्छेदों से करें यह देखने के लिए कि किस प्रकार यशायाह की कुछ भविष्यवाणियां पूरी हुईः

यशायाह 29:4	मरोनी 10:27
यशायाह 29:9–10, 13	जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:18–19
यशायाह 29:11–12	जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:63–65
यशायाह 29:14	सिद्धान्त और अनुबन्ध 4:1; 6:1

- यशायाह ने उन लोगों के बारे में बताया जो प्रभु का आदर करते हुए समीप आते हैं परन्तु अपना मन उससे दूर रखते हैं (यशायाह 29:13) । हम किस प्रकार सुनिश्चित हो सकते हैं कि हम अपने विचारों, क्रियाओं और शब्दों से प्रभु के नजदीक हैं ?

''मुझे छोड़ कोई उद्धारकर्ता नहीं''

यशायाह 40–49

38

यशायाह 40–49 का अध्ययन करें ।

- यशायाह 40:28–31; 42:16; 43:1–4; 44:21–23; और 49:14–16 की समीक्षा करें । जब आप प्रत्येक अनुच्छेद को पढ़ें, निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर खोजेंः इस अनुच्छेद में उद्धारकर्ता के कौन से गुणों का वर्णन किया गया है ? इस गुण को जानकर उद्धारकर्ता में हमारे विश्वास के बढ़ने में किस प्रकार सहायता होती है ?
- धर्मशास्त्रों में बाबुल का उपयोग अक्सर संसार की दुष्टता के प्रतीक के रूप में किया गया है । संसार के मार्गों पर चलने का परिणाम क्या है ? (देखें यशायाह 47:1, 5, 7–11) । प्रभु ने उन लोगों से क्या प्रतिज्ञा की है जो संसार की बजाय उसकी राह पर चलना चाहते हैं ? (देखें यशायाह 48:17–18) ।
- यशायाह 49 की कई भविष्यवाणियां दोनों, उद्धारकर्ता के कार्य और उसके सेवकों के कार्य पर लागू होती हैं । यशायाह 49:1–6 अन्तिम-दिनों में हमारी जिम्मेदारियों के विषय में क्या सीखाती हैं ?

''पहाड़ों पर उसके पांव क्या ही सुहावने हैं''

यशायाह 50–53

39

यशायाह 50–53 का अध्ययन करें ।

- उद्धारकर्ता के जीवन के बारे में यशायाह 53:2–5 हमें क्या बताता है ? वह हमारे दुखों और शोक को क्यों समझ सकता है ? (देखें अलमा 7:11–13; इब्रानियों 2:16–18; 4:15) । आपको किस प्रकार बोध होता है कि वह आपके दुखों और शोक को समझता है ? उद्धारकर्ता जख्मी होने, चोट और कोड़े खाने की पीड़ा को सहने का इच्छुक क्यों था ? (देखें 1 नफी 19:9) ।
- यशायाह ने उन कई घटनाओं के बारे में भविष्यवाणी की थी जो कि उद्धारकर्ता के प्रायश्चित से जुड़ी थीं । निम्नलिखित आयतें उद्धारकर्ता के प्रेम और उसके प्रायश्चित भरे बलिदान के बारे में क्या सीखाती हैं ?

  यशायाह 50:5–7 (मत्ती 26:39; फिलिप्पियों 2:8 भी देखें)

  यशायाह 51:6 (मुसायाह 16:9; अलमा 34:10 भी देखें) ।

  यशायाह 53:2–4 (अलमा 7:11–13; इब्रानियों 2:16–18 भी देखें)

  यशायाह 53:8–11 (मुसायाह 15:10–13 भी देखें)

अतिरिक्त पठनः मुसायाह 14–15

''अपने तम्बू का स्थान चौड़ा कर''
यशायाह 54–56; 63–65

40

यशायाह 54–56; 63–65 का अध्ययन करें ।

- यशायाह ने गिरजाघर की तुलना एक तम्बू से और गिरजाघर के स्टेकों की तुलना तम्बू के खूँटों से की है (यशायाह 54:2) । गिरजाघर और स्टेकों के विषय में उसने क्या सलाह दी है ? (देखें यशायाह 54:2–3) । हम जिस स्टेक के सदस्य हैं उसे मजबूत करने के लिए क्या कर सकते हैं ?
- यशायाह ने लिखा था कि परमेश्वर के वचन हमारी आत्माओं को वैसा ही पोषण दे सकते हैं जैसा कि वर्षा और हिम बीजों को देते हैं (यशायाह 55:10–13) । परमेश्वर के वचन हमारी आत्माओं को किस प्रकार पोषण देते हैं ? (देखें अलमा 32:28) ।
- जैसा कि यशायाह 65:17–25 में लिखा गया है, हजार वर्ष के दौरान क्या परिस्थितियां होंगी ?

''मैंने आज तुझे . . . लोहे का खम्भा बनाया है''
यिर्मयाह 1–2; 15; 20; 26; 36–38

41

यिर्मयाह 1–2; 15; 20; 36–38 का अध्ययन करें ।

यिर्मयाह ने ई.पू. 626 से लेकर 586 तक, पाँच राजाओं के शासन (योशिय्याह से सिदकिय्याह) के दौरान सेवा की थी । योशिय्याह के साथ, उसने मूर्तिपूजा और अनैतिकता से लोगों का मन फेरने का प्रयास किया था । यिर्मयाह का जीवन दुखों से भरा हुआ था, परन्तु कष्टों के प्रति उसकी प्रतिक्रिया हमें प्रेरित कर सकती है । यहूदा के राज्य के विरूद्ध भविष्यवाणी करने के कारण उसे मारा-पीटा गया और बन्दीगृह में डाल दिया गया था । उसका जीवन निरन्तर धमकियों के मध्य गुजरा था । फिर भी, सारी परेशानियों और विरोध के होते हुए, वह ''लोहे के खम्भे'' के समान था (यिर्मयाह 1:18) । यिर्मयाह की पुस्तक इसके जीवन के दुखों और कुण्ठाओं के प्रति इस भविष्यवक्ता के उत्तर का एक व्यक्तिगत, विश्वास को बढ़ानेवाला अभिलेख प्रदान करती है ।

- यिर्मयाह की बुलाहट पहले से नियुक्ति के सिद्धान्त के विषय में हमें क्या सीखाती है ? (देखें यिर्मयाह 1:5) ।
- यिर्मयाह ने किस विरोध का सामना किया जब उसने प्रभु द्वारा दिए गए अपने लक्ष्य को पूरा किया था ? (देखें यिर्मयाह 20:1–6; 26:7–15; 36:1–6, 20–24, 27–32; 37:12–16; 38:4–13) ।
- जब हम विरोध का अनुभव करते हैं तब सहायता के प्रति यिर्मयाह से क्या सीख सकते हैं ?
- यिर्मयाह 20:9 में, यिर्मयाह अपने अन्दर के प्रभु के वचन का वर्णन किस प्रकार करता है ? आपके विचार से इसका क्या अर्थ है कि प्रभु का वचन आपकी हड्डियों में धधकती हुई आग के समान है ?

''मैं इसे उनके हृदय पर लिखूँगा''
यिर्मयाह 16; 23; 29; 31

42

यिर्मयाह 16; 23; 29; 31 का अध्ययन करें ।

- जैसा कि यिर्मयाह 31:31–34 में लिखा गया है, प्रभु अन्तिम-दिनों में क्या करने की प्रतिज्ञा करता है ? (यहेजकेल 11:17–20; 36:24–28; 2 कुरिन्थियों 3:2–3 भी देखें) । परमेश्वर के नियम का हमारे हृदयों पर लिखे जाने का क्या अर्थ है ? परमेश्वर के नियम को अपने हृदयों पर अंकित करने के लिए हमें क्या करना चाहिए ? हमारे आचरण पर क्या प्रभाव पड़ता है जब हम अपने हृदयों पर परमेश्वर के नियम को लिख लेते हैं ?
- यिर्मयाह 29:12–14 के अनुसार, परमेश्वर की नजदीकी में जाने के लिए हम क्या कर सकते हैं ?

अतिरिक्त पठनः यिर्मयाह 3–9; 13; 30; 32:37–42; 33; 35 ।

इस्राएल के चरवाहे
यहेजकेल 18; 34; 37

43

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करेंः

क. यहेजकेल 34 । प्रभु उन चरवाहों की निन्दा करता है जो झुंड का खयाल नहीं रखते हैं । वह सारी खोई हुई भेड़ों को खोजेगा और उनका चरवाहा होगा ।

ख. यहेजेकेल 18:21–32 । यहेजकेल सीखाता है कि जो दुष्ट लोग पश्चाताप करेंगे उन्हें बचाया जाएगा और जो नेक लोग दुष्टता की तरफ मुड़ेंगे उन्हें बाहर निकाल दिया जाएगा ।

ग. यहेजेकेल 37:1–14 । यहेजकेल एक दिव्यदर्शन देखता है जिसमें कई सूखी हड्डियों में जीवन डाला जाता है ।

घ. यहेजेकेल 37:15–28 । यहेजकेल भविष्यवाणी करता है कि यहूदा की लकड़ी और यूसुफ की लकड़ी प्रभु के हाथों में एक लकड़ी के रूप में होंगे ।

597 ई.पू. में बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने यहूदा के राज्य के कई लोगों को बन्धक बना लिया था । इन्हीं बन्धकों में यहेजकेल था, जिसे प्रभु ने पाँच वर्षों के पश्चात भविष्यवक्ता के रूप में नियुक्त किया था । यहेजकेल ने 570 ई.पू. तक देश से निकाले हुए अपने लोगों की सेवा की थी ।

यहेजेकेल के लेखों में वे चेतावनियां और प्रतिज्ञाएं सम्मिलित हैं जो कि केवल यहूदा के प्राचीन राज्य पर ही लागू नहीं होती है बल्कि पूरे इस्राएल पर लागू होती हैं, आज के गिरजाघर के सदस्यों को सम्मिलित करते हुए ।

यद्यपि यरूशलेम का विनाश हो चुका था, यहेजकेल ने एक समय देखा था जब इस्राएल को एकत्रित और पुनःस्थापित किया जाएगा ।

- यहेजकेल 34 में बताए गए ''इस्राएल के चरवाहे'' कौन हैं ? किन तरीकों में हममें से हर कोई इस्राएल के चरवाहे के रूप में माना जाएगा ?
- उद्धारकर्ता किस प्रकार हमारे लिए चरवाहे के समान है ? (देखें यहेजकेल 34:11–16; भजन संहिता 23) ।
- ''अपना मन और अपनी आत्मा बदल डालो'' का क्या अर्थ है (यहेजकेल 18:31) । अपने मन के इस बदलाव को हम किस प्रकार अनुभव कर सकते हैं ? (देखें अलमा 5:7–14) ।
- यहेजकेल 37:15–28 में लिखी भविष्यवाणी में, यहूदा की लकड़ी पर लिखी हुई चीजों में से एक बाइबिल का प्रतिनिधित्व करती है । यूसुफ की लकड़ी पर लिखी हुई चीजों में से एक मॉरमन की पुस्तक का प्रतिनिधित्व करती है । बाइबिल के अतिरिक्त मॉरमन की पुस्तक के होने से कौन सी आशीषें आई हैं ।

अतिरिक्त पठनः यहेजकेल 2 ।

''जहां कहीं यह नदी पहुँचेगी वहां सब जन्तु जीएंगे''
यहेजकेल 43–44; 47

44

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. यहेजेकेल 43:1–12; 44:6–9, 23। यहेजकेल को दिव्यदर्शन में यरूशलेम में मन्दिर दिखाया जाता है।

ख. यहेजकेल 47:1, 6–12। यहेजकेल मन्दिर से बहती हुई एक नदी देखता है जो कि मरुस्थल में जीवन प्रदान करती है और मृत महासागर में इसका जल पहुँचता है।

ग. यहेजेकेल 47:2–5। यहेजकेल नदी की गहराई को नापता है और पता लगाता है कि पानी की गहराई हर बार बढ़ती जाती है जब-जब वह उसमें से होकर चलता है।

- यहेजकेल 43:1–12 और 44:6–9, 23 के मन्दिर के बारे में आप क्यी सीखते हैं ?
- यहेजकेल के दिव्यदर्शन के अनुसार, मन्दिर से बहती हुई नदी के कारण यहूदा के जंगलों और मृत महासागर में क्या बदलाव होंगे, जो कि यरूशलेम के पूर्व में है ? (देखें यहेजकेल 47:6–12)। किस प्रकार मन्दिर में उपलब्ध जीवन देने वाला पानी विवाहों, परिवारों, हमारे पूर्वजों, गिरजाघर को चंगा करता है और उन्हें जीवन प्रदान करता है ?

जब आप यहेजकेल 47:1, 6–12 में लिखे हुए विवरण का अध्ययन करते हैं, आप प्रकाशितवाक्य 22:1–3 और 1 नफी 8:10–11; 11:25 का अध्ययन भी कर सकते हैं। इन अनुच्छेदों में दिए हुए एक ही समान धारणाओं पर ध्यान दें।

''यदि मैं नाश हो गई तो हो गई''
दानिय्येल 1; 3; 6; एस्तेर 3–5; 7–8

45

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. दानिय्येल 1। दानिय्येल और उसके मित्र राजा नबूकदनेस्सर के भोजन को खाने से मना कर देते हैं (1:1–16)। प्रभु दानिय्येल और उसके मित्रों को अच्छे स्वास्थ्य और ज्ञान से आशीषित करता है (1:17–21)।

ख. दानिय्येल 3। शद्रक, मेशक, अबेदनगो राजा नबूकदनेस्सर के देवता की उपासना करने से मना करते हैं (3:1–12)। राजा नबूकदनेस्सर उन्हें धधकते हुए भट्टे की आग में डलवाता है, और प्रभु उन्हें मृत्यु से बचाता है (3:13–30)।

ग. दानिय्येल 6। राजा दारा के लोग राजा को एक आदेश पर हस्ताक्षर करने के लिए राजी कर लेते हैं कि 30 दिनों के लिए सभी अर्जियों का निर्देश किसी अन्य मनुष्य या परमेश्वर की बजाय उसकी तरफ से होनी चाहिए (6:1–9)। राजा के आदेश के बावजूद, दानिय्येल परमेश्वर से प्रार्थना करता है (6:10–13)। आदेश की आवज्ञाकारिता के दण्ड के रूप में, दानिय्येल को सिंहों की माँद में डाल दिया जाता है (6:14–17)। दानिय्येल को बचाने के लिए प्रभु एक दूत भेजता है (6:18–23)।

घ. एस्तेर 3–5; 7–8। एस्तेर का चचेरा भाई मोर्दकै, हामान के आगे नतमस्तक होने से मना करता है (3:1–4)। हामान राजा क्षयर्ष को राज्य के सभी यहूदियों की मृत्यु के लिए एक आदेश जारी करने को राजी करता है (3:5–14)। एस्तेर उसके लोगों को मारने की हामान की योजना के विषय में जान जाती है और राजा क्षयर्ष से सहायता मांगने के लिए जाने में अपने जीवन को जोखिम में डालती है (4:1–17)। राजा हामान के साथ एक जेवनार में आने की एस्तेर की याचना को मान लेता है (5:1–8)। जेवनार पर एस्तेर यहूदियों को मारने की हामान की योजना के बारे में बताती है (7:1–6)। राजा हामान का घात करवा देता है (7:7–10)। राजा मोर्दकै का सम्मान करता है और हामान के आदेश को बदलने की एस्तेर की याचना को मंजूरी दे देता है (8:1–17)।

एक युवा लड़के के रूप में, दानिय्येल को बन्धक बनाकर यरूशलेम से बाबेल ले जाया गया था । वह और अन्य आशावादी इब्रानी युवक—उसके मित्र शद्रक, मेशक, और अबेदनगो को सम्मिलित करते हुए—राजा नबूकदनेस्सर के प्रांगण में प्रशिक्षित किए गए थे ।

एस्तेर एक यहूदी स्त्री थी जो कि दानिय्येल के समय के कुछ ही समय पश्चात रहा करती थी । उसके माता-पिता की मृत्यु के पश्चात, उसके चचेरे भाई मार्दकै ने उसका पालन-पोषण किया था । एस्तेर बहुत ही सुन्दर थी, और फारस और मादै का राजा क्षयर्ष उसकी सुन्दरता से इतना प्रभावित था कि उसने उसे अपनी रानी बना लिया था ।

- दानिय्येल और उसके मित्रों ने क्या प्रस्ताव रखा था जब उन्हें राजा का भोजन यानि कि माँस और दाखमधु दिया गया था ? (देखें दानिय्येल 1:8–14) । उन लोगों ने वही आशीषें किस प्रकार प्राप्त की थीं जिन्हें प्रभु हमसे प्रतिज्ञा करता है यदि हम ज्ञान के शब्द का पालन करते हैं ? (देखें दानिय्येल 1:15, 17, 20; सि. और अनु. 89:18–20) ।
- क्या हुआ था जब शद्रक, मेशक, और अबेदनगो को धधकते हुए भट्टे की आग में डाला गया था ? (देखें दानिय्येल 3:21–27) । उनके साथ धधकते हुए भट्टे की आग में कौन था ? (देखें दानिय्येल 3:25) । उद्धारकर्ता हमारी किस प्रकार सहायता करता है जब हम अपनी परेशानियों के दौरान भी उसकी तरफ मुड़ते हैं ?
- आज हम कौन सी चुनौतियों का सामना करते हैं जिसमें एस्तेर के समान साहस की आवश्यकता है ? हम कौन सी आशीषें प्राप्त करेंगे जब हम कठिन परिणामों का सामना करने के बावजूद भी वह करने का प्रयास करते हैं जो कि सही है ?

अतिरिक्त पठनः एस्तेर 1–2; 6; 9–10 ।

''एक ऐसा राज्य, जो अनन्तकाल तक न टूटेगा'' 46

दानिय्येल 2

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. दानिय्येल 2:1–23 । राजा नबूकदनेस्सर एक स्वप्न देखता है और अपने सलाहकारों को इसका वर्णन और इसकी व्याख्या करने की आज्ञा देता है (2:1–13) । दानिय्येल अपने मित्रों के साथ प्रार्थना करता है, और परमेश्वर उस पर स्वप्न और उसकी व्याख्या को प्रकट करता है (2:14–23) ।

ख. दानिय्येल 2:24–49 । दानिय्येल बताता है कि राजा नबूकदनेस्सर का स्वप्न पृथ्वी के महान राज्यों की उन्नति और पतन के बारे बताता है और अन्य राज्यों पर परमेश्वर के राज्य के अन्तिम-दिन की विजय के बारे में बताता है ।

- दानिय्येल ने किस प्रकार उन महान परिकल्पना का वर्णन किया जिसे राजा ने स्वप्न में देखा था ? (देखें दानिय्येल 2:31–33) । परिकल्पना के विभिन्न भाग किसका प्रतिनिधित्व करते हैं ? (देखें दानिय्येल 2:36–43) ।
- ''बिना किसी हाथ के खोदे एक पत्थर का उखड़ना'' किस चीज का प्रतिनिधित्व करता है ? (देखें दानिय्येल 2:44–45; सि. और अनु. 65:2) । दानिय्येल ने अन्तिम-दिनों में गिरजाघर से संबंधित कौन सी भविष्यवाणी की थी ? (देखें दानिय्येल 2:34–35, 44) । दानिय्येल की भविष्यवाणी कि गिरजाघर ''सारी पृथ्वी पर फैल जाएगा'' और ''अनन्तकाल तक उसका नाश न होगा'' आज किस प्रकार पूरा हुआ है ?

अतिरिक्त पठनः सिद्धान्त और अनुबन्ध 65 ।

‘‘आओ हम कमर बान्धकर बनाने लगें’’ 47

एज्रा 1–8; नहेमायाह 1–2; 4; 6; 8

प्रार्थनापूर्वक निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करेंः

क. एज्रा 1–6 । राजा कुस्रू उन यहूदियों को आजाद करता है जिन्हें बाबेल में बन्धक बनाकर रखा गया था और उन्हें वापस यरूशलेम आकर मन्दिर के पुनःनिर्माण का निमंत्रण देता है (एज्रा 1) । जरुब्बाबेल और येशू लगभग 50,000 लोगों को वापस यरूशलेम लाते हैं, और वे मन्दिर का पुनःनिर्माण आरंभ करते हैं (एज्रा 2–3) । सामरी मन्दिर में सहायता करना चाहते हैं, और वापस चले जाते हैं, और काम को रोकने का प्रयास करते हैं; पुनःनिर्माण रुक जाता है (एज्रा 4) । कई वर्षो के पश्चात, भविष्यवक्ता हाग्गै और जकर्याह मन्दिर के काम को पूरा करने के लिए यहूदियों को उपदेश देते हैं; सामरी इसका विरोध करना जारी रखते हैं (एज्रा 5; हाग्गै 1 भी देखें) । राजा दारा मन्दिर के पुनःनिर्माण के कुस्रू के आदेश का नवीनीकरण करता है, और उसे पूरा कर लिया जाता है और लगभग 515 ई.पू. उसका समर्पण होता है (एज्रा 6) ।

ख. एज्रा 7–8 । यहूदियों के दूसरे दल को यरूशलेम ले जाने के लिए एज्रा फारस के राजा अर्तक्षत्र से अनुमति प्राप्त करता है । एज्रा और उसके लोग उपवास और प्रार्थना करते हैं, और प्रभु उनकी सुरक्षा करता है ।

ग. नहेमायाह 1–2; 4; 6 । जानकर कि यहूदी जो यरूशलेम को वापस आए थे वे ‘‘बड़ी दुर्दशा में पड़े होते हैं, और उनकी निन्दा होती है’’, नहेमायाह नगर की दीवारों के पुनःनिर्माण के प्रति यरूशलेम जाने के लिए राजा अर्तक्षत्र से अनुमति प्राप्त करता है (नहेमायाह 1–2) । यहूदियों के शत्रु दीवारों के पुनःनिर्माण से बचने का प्रयास करते हैं । नहेमायाह कार्य को तब तक जारी रखता है जब तक कि दीवारे पूरी नहीं बन जाती हैं (नहेमायाह 4; 6) ।

घ. नहेमायाह 8 । यरूशलेम के आसपास दीवारों के पुनःनिर्माण के पश्चात, एज्रा लोगों के लिए धर्मशास्त्रों को पढ़ता है । लोग रोते हैं और व्यवस्था के शब्दों के आज्ञापालन की इच्छा करते हैं ।

562 ई.पू. में नबूकदनेस्सर की मृत्यु के पश्चात, बाबेली ताकत में बड़ी तेजी से कमजोर हो जाते हैं । 539 ई.पू. में बाबेली मादी और फारसियों के समक्ष नतमस्तक हो जाते हैं, जो कि कुस्रू के नेतृत्व के तहत एकत्रित होते हैं (देखें दानिय्येल 5) । नबूकदनेस्सर के समान, कुस्रू भी एक शुभचिन्तक शासक बन जाता है जो बन्धक बनाए हुए लोगों के साथ उदारता से व्यवहार करता है और उनके धर्म का आदर करता है ।

बाबेल को अधीन बनाए जाने के थोड़े ही समय के पश्चात, कुस्रू यहूदियों (इस्राएलियों) को अपने राज्य यरूशलेम में वापस आने का और मन्दिर के पुनःनिर्माण का निमंत्रण देता है ।

458 ई.पू. में एज्रा, एक यहूदी याजक और लिपिक, बाबेल से वापस यरूशलेम यहूदियों के एक दूसरे दल को लाता है । नहेमायाह, एक यहूदी जो बाबेली राजा के आँगन में पियाऊ (भण्डारी) के महत्वपूर्ण पद पर था, यरूशलेम की दीवारों के पुनःनिर्माण के अधिकार के लिए एक शाही आयोग को प्राप्त किया था । इस कार्य को पूरा करने में यहूदियों की सहायता के लिए नहेमायाह और एज्रा ने एक साथ काम किया था ।

- नहेमायाह ने क्या किया जब सम्बल्लत ने उससे काम को रोकने और आकर उससे मिलने के लिए कहा ? (देखें नहेमायाह 6:1–4) । आज के समय में किस प्रकार कुछ लोग प्रभु के काम को रोकने के लिए गिरजाघर के सदस्यों का ध्यान भंग करने का प्रयास करते हैं ? इस प्रकार के ध्यान भंग के प्रति हमें किस प्रकार प्रतिक्रिया व्यक्त करनी चाहिए ?
- कितने समय तक एज्रा लोगों के लिए धर्मशास्त्रों को पढ़ता रहा ? (देखें नहेमायाह 8:3, 17–18) । लोगों ने किस प्रकार प्रतिक्रिया व्यक्त की ? (देखें नहेमायाह 8:3, 6, 9, 12) । हम किस प्रकार अधिक ध्यान देते हैं जब हम धर्मशास्त्रों को पढ़ते हैं ? हम धर्मशास्त्रों के लिए उस प्रकार का उत्साह कैसे बढ़ा सकते हैं जो कि उन लोगों में था ?

अतिरिक्त पठनः हाग्गै 1; ‘‘एज्रा’’, बाइबिल शब्दकोष, पृष्ठ 669; ‘‘नहेमायाह’’, बाइबिल शब्दकोष, पृष्ठ 669 ।

‘‘यहोवा का बड़ा और भयानक दिन’’ 48
जकर्याह 10–14; मलाकी

जकर्याह 10–14 और मलाकी का अध्ययन करें ।

- जकर्याह और मलाकी ने अन्तिम दिनों की कई भविष्यवाणियां की थीं । निम्नलिखित परिच्छेदों में किन घटनाओं का वर्णन किया गया है ?

  जकर्याह 12:2–3, 8–9

  जकर्याह 14:3–4
  (सि. और अनु. 45:48 भी देखें)

  जकर्याह 12:10; 13:6
  (सि. और अनु. 45:51–53 भी देखें)

  जकर्याह 14:5
  (सि. और अनु. 88:96–98 भी देखें)

  जकर्याह 14:9

  जकर्याह 14:12–13; मलाकी 4:1–3
  (1 नफी 22:15–17, 19 भी देखें)

  मलाकी 3:1

  मलाकी 4:5–6 (सि. और अनु. 2; 110:13–16 भी देखें)

- मलाकी ने कहा कि लोग ‘‘परमेश्वर को तब लूटते हैं’’ जब वे दसमांश और भेंट नहीं देते हैं (मलाकी 3:8–9) । किस प्रकार यह सच है ?

- ‘‘माता-पिता के मन को पुत्रों की ओर और पुत्रों के मन को माता-पिता की ओर फेरेगा’’ का क्या अर्थ है ? (इसका अर्थ है कि जीवित और मरे हुए लोगों के लिए पौरोहित्य की मुहरबन्द करनेवाली शक्ति और मन्दिर धर्मविधियों के द्वारा—अपने सभी पूर्वजों—अपने ‘‘माता-पिता’’—और अपनी सभी पीढ़ियों—अपने ‘‘पुत्रों’’ के साथ अनन्तता तक के लिए मुहरबन्द होना) ।

- आपने कैसा महसूस किया था अपने मन को अपने पूर्वजों की तरफ फेरकर जब आपने उनके लिए पारिवारिक इतिहास और मन्दिर कार्य किया था ? किस प्रकार मन्दिर अनुबन्धों की प्रतिज्ञाएं आपके मन को आपके माता-पिता, आपकी पत्नी या आपके पति, और बच्चों की तरफ फेरती हैं ?

अतिरिक्त पठनः सिद्धान्त और अनुबन्ध 45 ।

अन्तिम-दिनों के सन्तों का

यीशु मसीह का गिरजाघर

अगला आवरणः *हन्ना अपने पुत्र शमूएल को एली को समर्पित करती है,* रॉबर्ट टी. बैरेट द्वारा
अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर द्वारा प्रकाशित
सॉल्ट लेक सिटी, यूटाह
© 1996, 2001 Intellectual Reserve, Inc द्वारा ।
सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी ।
अंग्रेज़ी अनुमतिः 1/01 । अनुवाद अनुमतिः 1/01 ।
Old Testament: Class Member Study Guide का अनुवाद ।

HINDI
4 02345 92294 6
34592 294